शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 137 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 12 जून 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

मनोज जरांगे का अनशन जारी

मुंबई

मराठा आरक्षण से संबंधित मांगों को लेकर कार्यकर्ता मनोज जरांगे शनिवार से अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे हैं। अनशन के चार दिन बाद, मंगलवार को डॉक्टरों की सलाह के बावजूद उन्होंने नसों के माध्यम से तरल पदार्थ (आईवी फ्लुइड) लेने से इनकार कर दिया। जरांगे ने शनिवार को महाराष्ट्र के जालना जिले में अंतरवाली सराटी गांव से नए सिरे से भूख हड़ताल शुरू की है। बता दें कि वह मराठा समुदाय को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के तहत आरक्षण देने की मांग कर रहे हैं। जरांगे ने तरल पदार्थ लेने से किया इनकारः सरकारी ग्रामीण अस्पताल के एक दल ने आज सुबह उनकी जांच की। इस दौरान उनका ब्लड प्रेशर और शुगर स्तर कम था। डॉक्टरों ने उन्हें नसों के माध्यम से शरीर में तरल पदार्थ लेने की सलाह दी। मीडिया से बात करते हुए एक डॉक्टर ने इसकी जानकारी दी। हालांकि, जरांगे ने इस तरह से आहार लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने मीडिया से कहा, "ऐसा लगता है कि सरकार को हमारी दुर्दशा की बिलकुल चिंता नहीं है। मराठा समुदाय उन्हें सबक सिखाएगा।" मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जरांगे से जब महाराष्ट्र के मंत्री और ओबीसी नेता छगन भुजबल के इस बयान के बारे में पूछे जाने पर कि सरकार द्वारा मराठाओं को दिया गया 10 प्रतिशत आरक्षण न्यायिक जांच में खरा उतरेगा, इस पर उन्होंने कहा कि भुजबल को इस मुद्दे पर हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। बता दें कि जरांगे मराठा आरक्षण के लोगों को कुंबी जाति प्रमाणपत्र देने की मांग कर रहे हैं। दरअसल, महाराष्ट्र में कुंबी समुदाय को ओबीसी श्रेणी में रखा गया है ऐसे में मराठा आरक्षण के लोगों को कुंबी जाति प्रमाणपत्र देने से उन्हें (मराठा आरक्षण के लोगों को) आरक्षण का लाभ मिल सकेगा।

वित्त विभाग महीनों से बेरोजागरी भत्ते के बिलों को रोककर बैठा: गहोलत

जयपुरः सरकार में लंबित बिलों के भुगतान को लेकर लगातार नए-नए मामले सामने आ रहे हैं। पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने प्रदेश की भजनलाल सरकार पर बेरोजगारी भत्ता रोकने का बड़ा आरोप लगाते हुए कहा है कि वित्त विभाग महीनों से बेरोजागरी भत्ते के बिलों को रोककर बैठा है।

वाराणसी में हारते-हारते बचे हैं पीएम मोदी: राहुल

मेरी बहन लड़ जाती तो वह दो-ढाई लाख वोटों से हारते पीएम मोदी: राहुल गांधी

रायबरेली।

राहुल ने कहा कि पहली बार देश के प्रधानमंत्री हिंसा के बलबूते चुनाव लड़ रहे थे। उप्र की जनता ने हिंसा और अहंकार के खिलाफ दबाकर वोट किया। सबसे पहले कांग्रेस पार्टी के नेता एमएल और एमपी कांग्रेस के कार्यकर्ता अहंकार के शिकार नहीं होंगे। हमारा पारिवारिक रिश्ता है । राजनीति में सबसे पुराना हमारा और रायबरेली का रिश्ता है। जब किसान आंदोलन में नेहरू जी आए। पूरे देश की राजनीति रायबरेली और अमेठी ने बदल दी है। पहले पीएम कहते थे कि मैं काम नहीं करता भगवान काम करवाते हैं। पता नहीं उनके भगवान कैसे काम उनसे करवाते हैं। अडानी व अंबानी... हिंदुस्तान की जनता नया विजन चाहती है। उत्तर प्रदेश ने मैसेज दिया है कि इंडिया गठबंधन चाहिए। सबसे पहले हमें यही काम करना है कि नफरत की दुकान में मोहब्बत की दुकान खोलनी है। सबसे बड़ी बात है कि ये अयोध्या हार गए। इन्हें जवाब ने भी जवाब दिया है।

'वाराणसी से अगर प्रियंका लड़ी होती तो...'

राहुल ने कहा कि अगर प्रियंका वाराणसी से लड़ गई होती तो यह वाराणसी से पीएम के खिलाफ दो से तीन लाख वोटों से जीत जाती। हिंस्दुस्तान के प्रधानमंत्री ने सिर्फ नफरत की दुकान फैलाई। आने वाले समय में बेरोजगारी, महंगाई का मुद्दा उठाया जाएगा। अब हमारे पास संसद में सेना बैठी हुई है। हम विपक्ष में रहकर अग्निवीर को उठाएंगे।

राहुल ने कहा मैं वायदा करता हूं कि जो रायबरेली में होगा वही अमेठी में भी होगा।

रायबरेली-अमेठी से परिवार का नाता: राहुल गांधी

रायबरेली

कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी अपनी बहन एवं पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा के साथ मंगलवार को रायबरेली पहुंचे। रायबरेली के नवनिर्वाचित सांसद राहुल गांधी ने रायबरेली और अमेठी लोकसभा क्षेत्र में कांग्रेस की जीत पर पार्टी कार्यकर्ताओं का आभार जताया। राहुल ने कार्यकर्ता आभार समारोह में कहा कि उनका रायबरेली और अमेठी से राजनीति का नहीं बल्कि परिवार का नाता है। यहां के खेत-खलिहानों से उनके रिश्ते जुड़े हैं।

प्रियंका वाड्रा की मौजूदगी में राहुल ने कहा कि यह पहली बार है कि गठबंधन के प्रत्येक कार्यकर्ता ने मजबूती के साथ चुनाव लड़ा। एक-एक कार्यकर्ता ने पूरी जान लगा दी। एक इंच भी पीछे नहीं हटे। उन्होंने कहा कि अडानी और अंबानी नहीं आज हिंदुस्तान के विजन की जरूरत है। युवाओं और किसानों की बात होनी चाहिए। अब देश का युवा जाग चुका है। हक के लिए हर बदलाव चाहता है। प्रियंका वाड्रा ने कहा कि आप सबने कठिन परिस्थितियों में लड़ाई लड़ी। अमेठी के नवनिर्वाचित सांसद किशोरी लाल शर्मा को कहीं भी कोई कमी महसूस नहीं होने दी। दोनों जिलों के जिलाध्यक्ष को बहुत-बहुत धन्यवाद। प्रियंका ने कहा कि सपा के मंच पर बैठे साथी और कार्यकताओं को मिलाकर हमने सेना बनाई और हमने दोनों जिले जीते। पूरा देश आप की तरफ देख रहा है। इस दौरान राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी, महासचिव केसी वेणुगोपाल, अविनाश पांडे, प्रदेश अध्यक्ष अजय राय, रायबरेली के जिला अध्यक्ष पंकज तिवारी, अमेठी के जिला अध्यक्ष प्रदीप सिंघल सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

रायबरेली पहुंचे राहुल-प्रियंका, अमेठी के सांसद किशोरी ने किया स्वागत

सपा और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मिलकर एक साथ लड़ाई लड़ी

रायबरेली

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष और रायबरेली से सांसद राहुल गांधी कांग्रेस राष्ट्रीय महासचिव/संगठन प्रभारी केसी वेणुगोपाल रायबरेली पहुंचे। उनके साथ उनकी बहन और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी भी मौजूद रहीं। राहुल गांधी ने कहा कि प्रदेश ही नहीं पूरे देश में कांग्रेस पार्टी एक होकर लड़ी। उन्होंने कहा कि सपा और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मिलकर एक साथ लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा कि यह हमने पहली बार देखा कि इंडिया गठबंधन एक साथ लड़ाई लड़ी। इससे पहले प्रियंका गांधी ने कहा कि हमने कठिन से कठिन परिस्थितियों में लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा कि सपा के सहयोग से हमने यहां एक सेना बनाई और इस सेना ने दोनों रायबरेली और अमेठी में ऐतिहासिक जीत हासिल की। रायबरेली के फुरसतगंज एयरपोर्ट हवाई अड्डे पर उनका स्वागत राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पांडे एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय, अमेठी सांसद किशोरी लाल शर्मा ने स्वागत किया। साथ में नेता विधानमंडल दल आराधना मिश्रा मोना, राज्यसभा में उपनेता प्रमोद तिवारी ने भी स्वागत किया।

चंद्रबाबू नायडू चुने गए एनडीए विधायक दल के नेता

विशाखापत्तनम

आंध्र प्रदेश में सरकार गठन की तैयारियां तेज हो गई हैं। मंगलवार को तेदेपा और एनडीए ने चंद्रबाबू नायडू को अपना विधायक दल का नेता चुन लिया। विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद तेदेपा, भाजपा और जनसेना गठबंधन के नेता राज्यपाल एस अब्दुल नजीर से मुलाकात करेंगे और सरकार बनाने का दावा पेश करेंगे। बुधवार को चंद्रबाबू नायडू के साथ कई और नेता भी शपथ ले सकते हैं। नायडू के साथ शपथ लेने वाले नेताओं के नाम मंगलवार को तय कर लिए जाएंगे। जनसेना पार्टी ने पवन कल्याण को चुना विधायक दल का नेताः आंध्र प्रदेश में

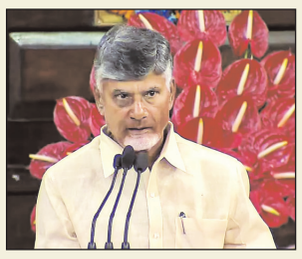

12 जून को नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह होना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हो सकते हैं। वहीं जनसेना पार्टी ने अपने विधायक दल का नेता पार्टी के प्रमुख पवन कल्याण को चुन लिया है। पवन कल्याण मंगलवार सुबह मंगलागिरी स्थित पार्टी मुख्यालय पहुंचे, जहां उन्हें जनसेना पार्टी के विधायकों ने अपना नेता चुना।

तेदेपा को मिला जबरदस्त समर्थन

आंध्र प्रदेश में हुए विधानसभा चुनाव में राज्य की 175 सीटों में से 135 सीटें जीतकर चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व वाली तेलुगु देशम पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनी है। पवन कल्याण की जनसेना पार्टी ने 21 सीटें जीती हैं और भाजपा को भी आठ सीटों पर जीत हासिल हुई है। वहीं जगनमोहन रेड्डी की पार्टी वाईएसआरसीपी महज 11 सीटों पर सिमट गई है।

आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में तेदेपा, जनसेना और भाजपा गठबंधन बनाकर चुनाव मैदान में उतरीं थी।

कानून मंत्रालय ने राष्ट्रीय मुकदमा नीति के दस्तावेज को अंतिम रूप दिया

नई दिल्ली

केंद्रीय कानून मंत्रालय ने राष्ट्रीय मुकदमा नीति के दस्तावेज को अंतिम रूप दे दिया है। इसका उद्देश्य यह है कि देश की विभिन्न अदालतों में लंबित पड़े मामलों का त्वरित समाधान किया जाए। कानून राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल ने कार्यभार संभालने के तुरंत बाद राष्ट्रीय मुकदमा नीति के दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए। अब आने वाले दिनों में मुकदमा नीति को मंजूरी के लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल के समक्ष रखा जाएगा। सूत्रों की मानें तो यह नीति मोदी 3.0 सरकार के 100 दिन के एजेंडे का हिस्सा है।

न्याय प्रक्रिया में तेजी लाना सबसे बड़ी प्राथमिकता

कार्यभार संभालने के तुरंत बाद केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता न्यायालयों, न्यायाधिकरणों और उपभोक्ता अदालतों में लंबित पड़े मामलों की न्याय प्रक्रिया में तेजी लाना है। इस मामले जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि दस्तावेज में लंबित पड़े मामलों के त्वरित समाधान का जिक्र किया गया है। बताया कि यह पहला काम था, जिसे केंद्रीय मंत्री सबसे पहले निपटाना चाहते थे। बता दें कि राष्ट्रीय मुकदमा नीति का मसौदा पिछली अलग अलग सरकारों में कई बार तैयार किया गया। कई वर्षों से सरकारों द्वारा इसकी रूपरेखा पर विचार-विमर्श किया गया। केंद्रीय मंत्री मेघवाल ने कहा कि नई नीति के पास होने से लंबित पड़े मामलों पर तुरंत सुनवाई होगी और आम जनता को आसानी होगी।

शाह ने फिर संभाला गृह मंत्रालय का प्रभार

नई दिल्ली

तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद नरेंद्र मोदी ने सोमवार शाम को अपने मंत्रियों के विभागों का बंटवारा किया। मोदी ने अपने पुराने सिपहसालारों पर भरोसा करते हुए मंत्रिमंडल में किसी बड़े बदलाव से गुरेज किया है। उन्होंने अमित शाह, राजनाथ सिंह, एस जयशंकर और अश्विनी वैष्णव समेत कई मंत्रियों पर फिर से विश्वास जताया है। वहीं, कुछ मंत्रालय में बदलाव भी किया है। केंद्रीय मंत्री अमित शाह पर पीएम मोदी ने एक बार फिर भरोसा दिखाया। उन्हें फिर से केंद्रीय गृह मंत्री का कार्यभार सौंपा गया है। उन्होंने गृह मंत्री के रूप में कार्यभार संभाल लिया। वहीं, सहकारिता मंत्री का भी कार्यभार संभाला। किरेन रिजिजू ने संसदीय कार्य मंत्री, संजय सेठ ने रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री और एल. मुरुगन ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री का कार्यभार संभाला। वहीं, केंद्रीय मंत्री सुरेश गोपी ने पर्यटन मंत्रालय के राज्य मंत्री का कार्यभार संभाला। साथ ही डॉ. जितेंद्र सिंह ने कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री, केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री का पदभार संभाला। राजीव रंजन(ललन) सिंह ने पंचायती राज मंत्री और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री के रूप में पदभार संभाला। रिजिजू ने कहा, 'संसद में हमारे देश के भविष्य की चर्चा होती है और यहां से निर्णय लेकर हम देश की सेवा करते हैं। हर राजनीतिक दल का मकसद एक है-देश की सेवा...इसलिए संसद चलाने में सबका योगदान चाहिए।'

...तो केंद्र में मोदी की सरकार गिर सकती है

पटना

देश के जाने-माने राजनीतिक विश्लेषक और जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर इन दिनों खूब चर्चा में हैं। चर्चा का कारण है कि प्रशांत किशोर की 'फेल' भविष्यवाणी। किशोर ने लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण के बाद दावा किया था कि बीजेपी को 300 से ज्यादा सीटें आएंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उनकी भविष्यवाणी पूरी तरह से गलत साबित हुई। दरअसल, प्रशांत किशोर ने एक

इंटरव्यू में कहा कि अगर विपक्षी गठबंधन यानी आईएनडीआईए आनेवाले विधानसभा चुनावों में बीजेपी को हरा देता है तो केंद्र में मोदी की सरकार को दिक्कत आ सकती है। प्रशांत किशोर ने यह भी कहा कि अगर आईएनडीआईए गठबंधन ने हरियाणा, झारखंड और महाराष्ट्र में बीजेपी को हरा दिया, तो केंद्र में मोदी की सरकार गिर सकती है। बता दें कि इस बार के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला। बीजेपी ने 240 सीटों पर जीत दर्ज की। वहीं, एनडीए के घटक दलों के साथ आंकड़ा 292 पर पहुंचा। बीजेपी का सबसे बड़ा सहयोग टीडीपी और जदयू ने किया। टीडीपी ने लोकसभा चुनाव में 16 सीटें जीती। वहीं, नीतीश की जदयू ने 12 सीटों पर परचम लहराया। दोनों दलों का साथ एनडीए 3.0 के लिए बहुत जरूरी है।

मणिपुर में एक साल से हिंसा जारी, पीएम के पास समय नहीं: गोगोई

इंफाल

कांग्रेस नेता गौरव गोगोई ने मंगलवार को एक बार फिर मणिपुर हिंसा को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री से उम्मीद नहीं की जाती कि वह हिंसा प्रभावित मणिपुर में मौजूदा हालात पर आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के शब्दों पर ध्यान देंगे। वह फिलहाल पूर्वोत्तर राज्यों को नजरअंदाज ही करेंगे। इसके अलावा, कानून प्रवर्तन एजेंसियों का दुरुपयोग करेंगे और भारतीय संविधान को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश करेंगे। गोगोई ने कहा, 'मैं पीएम मोदी से यह उम्मीद नहीं करता कि वह आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के शब्दों पर कोई ध्यान देंगे। कानून लागू करने वाली एजेंसियों का दुरुपयोग करेंगे और भारतीय संविधान को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश करेंगे।' उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, 'शुक्र है कि लोगों ने इंडिया गठबंधन को अपनी ओर से बोलने और भारतीय संसद और संविधान की रक्षा के लिए चुना है।'

योगी कैबिनेट ने नई तबादला नीति पर लगाई मुहर

चुनाव बाद हुई बैठक में 41 प्रस्ताव पास, लाखों कर्मचारियों को वेतन वृद्धि का दिया तोहफा

लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में 2024-25 के लिए नई स्थानांतरण नीति को मंजूरी दे दी है। बैठक में कुल 42 प्रस्ताव रखे गए जिनमें से 41 को मंजूरी दे दी गई है। नई स्थानांतरण नीति के तहत समूह क और ख के उन अधिकारियों का स्थानांतरण किया जा सकेगा, जिन्होंने जनपद में 3 वर्ष और मंडल में 7 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। वहीं समूह ग और घ में सबसे पुराने अधिकारियों का स्थानांतरण किया

जाएगा। समूह क और ख के अधिकारियों के स्थानांतरण के लिए अधिकतम 20 प्रतिशत तो वहीं समूह ग और घ के लिए अधिकतम 10 प्रतिशत की सीमा रखी गई है। इस स्थानांतरण नीति के तहत सभी स्थानांतरण आगामी 30 जून तक किए जाने हैं। बैठक में बुंदेलखंड क्षेत्र की 50 में से 26 परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है। जिनकी कुल लागत 10858 करोड़ रुपये है। इसमें 1394 करोड़ रुपये की वृद्धि की गई है।

एक दिन पूर्व रिटायर होने वाले कर्मचारियों को मिलेगा वेतन वृद्धि का लाभ

कैबिनेट ने प्रदेश के लाखों सरकारी कर्मचारियों को बड़ी सौगात दी है। इसके अनुसार अब 30 जून और 31 दिसंबर को रिटायर होने वाले सरकारी कर्मचारियों को एक जुलाई और एक जनवरी से प्रस्तावित वेतन वृद्धि का लाभ मिल सकेगा। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि अभी तक जो व्यवस्था थी उसके अनुसार 30 जून और 31 दिसंबर को रिटायर होने वाले कर्मचारियों को एक जुलाई या एक जनवरी को प्रस्तावित वेतन वृद्धि का लाभ नहीं मिल पाता था। हालांकि अब कैबिनेट ने इसकी मंजूरी दे दी है। इससे कर्मचारियों को वेतन वृद्धि का लाभ उनकी पेंशन और ग्रेच्युटी में मिल सकेगा। उन्होंने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के एक निर्णय के बाद ज्यूडिशियल कर्मचारियों को पहले ही इसका लाभ दिया जा चुका है और अब सरकारी कर्मचारी भी इससे लाभान्वित हो सकेंगे।

विश्वविद्यालयों के नामों में संशोधन, 2 निजी विश्वविद्यायलों को एलओआई

योगी सरकार ने प्रदेश के 5 विश्वविद्यालयों के नामों में भी मामूली संशोधन किया है। स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार इन विश्वविद्यालयों के नाम से राज्य शब्द को हटाया गया है। महाराज सुहेलदेव राज्य विश्वविद्यालय आजमगढ़ का नाम अब महाराज सुहेलदेव विश्वविद्यालय आजमगढ़ होगा। इसी तरह मां शाकुम्भरी देवी राज्य विश्वविद्यालय सहारनपुर, मां विंध्यवासिनी राज्य विश्वविद्यालय मीरजापुर, मां पाटेश्वरी देवी राज्य विश्वविद्यालय बलरामपुर से भी राज्य शब्द को हटाने को मंजूरी दी गई है।

बिहार में ऑनलाइन गेमिंग करने वाले जालसाज पकड़े गए

साइबर गैंग के 12 सदस्य अरेस्ट, 84 मोबाइल, 12 लैपटॉप बरामद, फजीर्वाड़ा कर 2.53 करोड़ कमाए

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज पुलिस ने ऑनलाइन जालसाजी करने वाले बड़े गिरोह का भंडाफोड़ किया है। यह गैंग ऑनलाइन गेमिंग के नाम पर करोड़ों का खेल कर रहा था। तीन वेबसाइट लेजर, 99 एक्सचेंज और 11 एक्स प्ले के जरिए यह शातिर क्रिकेट, फुटबाल, हॉकी, लूडो, चेस, कार रेस, बॉक्सिंग आदि खेलों के जरिए रुपए लगवाते थे। गैंग के संचालक पहले ऑनलाइन गेमिंग में लड़कों को जिता देते थे ताकि उनकी लत बढ़ जाए फिर बढ़ी रकम लगने पर उन्हें हरा कर लाखों कमाते था। गेमिंग का पूरा फार्मेट गैंग के पास होता था। ऐसे में वह जब चाहे जिसे चाहे हरा और जिता सकते थे।डीसीपी यमुना नगर श्रद्धा नरेंद्र पांडेय की स्पेशल टीमें इस गिरोह की गतिविधियों को वॉच कर रही थी। सटीक जानकारी और सुराग पाने के बाद मंगलवार को गिरोह के 12 सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया। शातिरों के पास से 42 मोबाइल बरामद किया है। साथ ही 12 लैपटॉप, 52 सिम कार्ड बरामद हुए। पकड़े गए गिरोह के पास से ऑनलाइन गेमिंग संचालन से कमाई रकम का ब्योरा मिला है। इसमें दो करोड़ 53 लाख रुपये का लेखाजोखा है जिसे लेकर जांच आगे बढ़ाई जा रही है।

बिहार के गोपालगंज से भी गिरफ्तारी

यहां पकड़े गए गिरोह के तार बिहार के गोपालगंज से जुड़े हैं। धरपकड़ के बाद प्रयागराज कमिश्नरेट पुलिस ने बिहार पुलिस से संपर्क कर जानकारी साझा की तो वहां भी 12 आरोपी पकड़े गए। उनके पास से 42 मोबाइल बरामद हुए हैं जिनसे यह पूरा सिस्टम संचालित किया जा रहा था।डीसीपी यमुना नगर श्रद्धा नरेंद्र पांडेय ने गिरोह के पकड़े जाने के बाद उन्हें पुलिस लाइन सभागार में मीडिया के सामने पेश किया। बताया कि ऑनलाइन गेमिंग के लिए इन लोगों ने तीन साइट बनाई हुई थी। सोशल मीडिया साइट पर बड़ी गेमिंग कंपनियों की तरह यह एड देते थे। फेसबुक, इंस्ट्राग्राम, वाट्सएप ग्रुप समेत अन्य प्लेटफार्म पर अपनी तीनों साइट का प्रचार कर युवाओं को गेम खेलने पर मोटी रकम मिलने का लॉलच देते थे। इसके बाद 100 रुपये की एंट्री फीस पर उसे मेंबर बनाकर फ्राड करते थे।खिलाड़ियों को फंसाने के लिए शुरूआती दौर में वह 30 से 35 हजार रुपये तक जिता भी देते थे ताकि खिलाड़ी को विश्वास हो जाए और वह लाखों की रकम लगाने लगे। जैसे ही मोटी रकम लगती वह गेम हरा देते थे। इनके 11 बैंक खातों का पता चला है जिसमें रुपये ट्रांसफर होते थे। पकड़े गए गिरोह के सदस्यों ने नैनी इलाके में एक अपार्टमेंट किराए पर ले रखा था। हर दो माह बाद घर बदल देते थे। अपार्टमेंट में छापामारी में बहुत सारे लोगों के आधार कार्ड भी मिले हैं। अरेस्ट करने वाली टीम में इंस्पेक्टर साजिद अली, एसओजी के रणजीत सिंह, विवेक कुमार, रमानंद शर्मा आदि शामिल हैं।

गिरफ्तार साइबर ठग

1. सूरज चौरसिया पुत्र यमुना प्रसाद (21) निवासी पुरारामपुर बेला थाना पट्टी प्रतापगढ़। 2. पीयूष यादव उर्फ प्रिंस पुत्र स्व. रविकुमार यादव (23) निवासी रायगंज थाना कोतवाली गाजीपुर। 3. घनश्याम वर्मा पुत्र भाऊराम वर्मा (34) निवासी दयालबंध थाना कोतवाली जनपद बिलासपुर छत्तीसगढ़।4. हिमांशु यादव पुत्र जितेंद्र यादव (22) निवासी रायगंज थाना कोतवाली गाजीपुर।5. मनीष निषाद पुत्र वेदराम निषाद (22) निवासी ग्राम मरारटोला थाना दांडी जिला बालोद छत्तीसगढ़।6. अजीम फरीद पुत्र शहनवाज (23) निवासी कपूरपुर रायगंज थाना कोतवाली गाजीपुर।7. शादाब पुत्र स्व. आफताब (21) निवासी टाउनहाल निगाही बेग थाना कोतवाली गाजीपुर।8. प्रवीण वर्मा पुत्र जलेश्वर वर्मा (21) निवासी दयालपुर मधुबन रोड बिलासपुर छत्तीसगढ़।9. विजय निषाद पुत्र स्व. शेखर निषाद (30) निवासी मनोरा थाना गुंडरदेही बालोद छत्तीसगढ़।10. राहुल कामले पुत्र रामेश्वर कामले (30) निवासी गांधी चौक सिटी कोतवाली बिलासपुर छत्तीसगढ़।11. मो. समीर पुत्र गुलाम मुर्तजा (20) निवासी गोपीगंज बस स्टैंड थाना गोसाईगंज भदोही।12. आशुतोष यादव पुत्र रामवृक्ष यादव (24) निवासी रायगंज कोतवाली गाजीपुर।

प्रधानमंत्री ने जो कहे थे वह सरकार बनते ही करके दिखाएंगे : संजय श्रीवास्तव

नैनी। नैनी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जो कहे वह किया भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा महानगर प्रयागराज उपाध्यक्ष संजय श्रीवास्तव ने कह प्रधानमंत्री ने जो कहे थे वह सरकार बनते ही करके दिखाएंगे सरकार बनते ही किसानों के खातों में पैसा दे दिया जाएगा एवं सर्वप्रथम गरीबों के लिए मकान बनाने के लिए 3 करोड़ गरीबों का आशियाना बसाने का वादा प्रधानमंत्री ने शपथ लेते ही हस्ताक्षर करके एक बहुत बड़ा कदम उठाया इसका सराहना करते हुए संजय श्रीवास्तव ने कहा देश के प्रधानमंत्री ऐसा होना चाहिए जो किसानों और गरीबों को ध्यान में रखते हुए अपनी सारी योजनाएं को बनाया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विचारों से आज पूरा देश खुशहाल है हर तरफ खुशियां ही खुशियां का लोग इजहार कर रहे हैं मोदी ने जो कहे थे वह करके दिखाया इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता सुशील शुक्ला वरिष्ठ पार्षद मयंक यादव सेक्टर प्रभारी प्रदीप तिवारी मंडल अध्यक्ष नीरज शर्मा महामंत्री उमेश सेन उपाध्यक्ष नित्यानंद मिश्रा रमेश पटेल राज सिंह सुधीर प्रजापति सुनील कुशवाहा सुनील विश्वकर्मा धर्मराज पटेल रमेश पटेल कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री को बधाई दिया कि ऐसा प्रधानमंत्री जिन्होंने पद संभालते ही किसानों के खातों में पैसा भेज वादा किया एवं गरीबों के मकान बनाने के लिए हस्ताक्षर करके तत्काल लागू किया।

कार और बाइक की भिड़ंत में घायल शिवम की देर रात हुई मौत

चाचा व भतीजे का एक साथ हुआ दाहसंस्कार, हर किसी के आंखे नम

अखण्ड भारत संदेश

चाचा सचिन आदिवासी

भतीजा शिवम् कुमार आदिवासी

मांडा। सोमवार दोपहर बाद अपनी बहन के घर से लौटते वक्त रास्ते में कार व बाइक से जोरदार भिड़ंत हो गई जिससे एक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वही बाइक पर सवार गम्भीर रूप से घायल की भी इलाज के दौरान देर रात मौत हो गई। दोनों का पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद एक ही साथ सोनबरसा गांव के समीप बेलन नदी से जुड़ा सरस्वती नदी के किनारे दाहसंस्कार किया गया। गौरतलब हो कि सचिन आदिवासी (23)पुत्र खुशी लाल निवासी सोनबरसा ,मांडा जो अपनी बहन के घर से दोपहर बाद रास्ते में लौटते वक्त अचानक दूसरी ओर से आ रही कार ने बाइक में ऐसे टक्कर मारी की बाइक के खपच्चे उड़ गए । जहां कि सचिन कुमार की मौके पर ही मौत हो गई। और बाइक पर सवार शिवम् कुमार की गम्भीर हालत देख आनन-फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मांडा ले जाया गया । वहीं डॉक्टरों ने तत्काल शहर के लिए रिफर कर दिया ।शिवम कुमार की भी इलाज के दौरान देर रात मौत हो गई। घटना की जानकारी पर परिजनों मे कोहराम मच गया। मृतकों में चाचा सचिन आदिवासी व भतीजा शिवम् कुमार का पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद दोनों का दाहसंस्कार एक साथ ही किया गया।

रिश्ते में दोनों थे चाचा भतीजा

सचिन और शिवम रिश्ते में चाचा और भतीजा थे। सचिन शिवम का चाचा लगता था लेकिन हम उम्र होने के एक दूजे के साथ ही ज्यादातर रहते थे। मंगलवार को सचिन और शिवम का शव पोस्टमार्टम के बाद घर पहुंचा तो कोलाहल मच गया,क्या मालूम था कि दोनों कि चीता एक साथ ही जली।पूरा गांव दुःखी रहा। परिवार जनों को लोग ढाढंस बंधाते रहे।

ग्रीष्म कालीन वॉलीबाल प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन

21 दिवसीय वॉलीबाल प्रशिक्षण शिविर के दौरान बच्चों ने फोर आर्म पास, अपर हैंड व अंडर हैंड पास,अपर हैंड सर्विस व स्मैश की सीखी बारीकियां

अखंड भारत संदेश

मेजा। डिस्ट्रिक्ट वॉलीबाल एसोसिएशन (डीवीए),प्रयागराज के तत्वावधान में स्थानीय मेजारोड स्थित क्षेत्रीय वॉलीबाल स्टेडियम सोरांव पातीं के वॉलीबाल कोर्ट पर फ्रेंड्स क्लब मेजा के सहयोग से आयोजित 21 दिवसीय ग्रीष्म कालीन वॉलीबाल प्रशिक्षण शिविर-2024 का मंगलवार को समापन हो गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि अग्रवाल कॉलेज सिरसा के पूर्व प्रधानाचार्य विजय शंकर तिवारी ने खिलाड़ियों को प्रमाण-पत्र वितरित कर उनका उत्साहवर्धन किया। कोचिंग कैंप के सह-प्रशिक्षक गणेश प्रसाद शुक्ल ने मा.मुख्य अतिथि महोदय का खिलाड़ियों से परिचय करवाया। प्रशिक्षण शिविर में अंडर-16 व अंडर-14 आयु वर्ग के खिलाड़ियों ने सुबह-शाम दो घंटे के सघन अभ्यास के दौरान फोर आर्म पास, अपर हैंड पास, अंडर हैंड पास, अपर हैंड सर्विस व स्मैश आदि के गुण कला-कौशल सीखकर प्रदर्शन किये। समारोह की अध्यक्षता कर रहे जिला वॉलीबाल संघ के अध्यक्ष प्रभात राय ने धन्यवाद ज्ञापित किया। विशिष्ट अतिथि द्वय वाई.एन.सिंह व के.बी.एल.श्रीवास्तव ने नवोदित खिलाड़ियों भूरि-भूरि प्रसंशा की। शिविर के मुख्य प्रशिक्षक आई.बी.सिन्हा रहे। स्टेट रेफरी व वॉलीबाल कोच मुकेश शुक्ला ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। एसोसिएशन के अवैतनिक महासचिव आर.पी.शुक्ला ने उपस्थित समस्त आगंतुकों के प्रति आभार प्रकट किया। समापन समारोह के अवसर पर कई राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों व निर्णायकों में,जिसमें मुख्य रुप से फूलचंद गुप्ता, अल्ताफ अली, सुरेंद्र यादव, धनजंय राय, विनोद शुक्ला, अजय राय, कुशलकांत मिश्रा, आशीष शुक्ला, रामस्नेही शुक्ला, संतोष भास्कर, के.पी.सिंह, आशीष कन्नौजिया, मनोज राय, प्रभाकर चौबे, गुलजार सिंह यादव, शशि भूषण सिंह, गुलशन हाशमी, अनुपम राय, विवेक शुक्ला, अंकित विश्वकर्मा, मौसम कुशवाहा, आदिल अंसारी, चंचल प्रजापति, हिमांशु मिश्रा व आकाश सैनी आदि लोग उपस्थित रहें।

इंडिया गठबंधन सांसद उज्जवल रमण का अभिनंदन समारोह कार्यक्रम डीहा में आज

जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय बाबू यादव के नेतृत्व में आयोजित भव्य अभिनंदन समारोह सामिल होगे दिग्गज

करछना। इंडिया गठबंधन के नवनिर्वाचित सांसद उज्जवल रमण सिंह का जमुनापार के करछना विधानसभा के करछना तहसील के अंतर्गत डीहा में प्रकाश पब्लिक स्कूल के प्रांगण में बुधवार को 5:00 बजे पार्टी कार्यकताओं के तरफ से नवनिर्वाचित सांसद उज्जवल रमण का स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम बेहद तरीके से किया जाएगा उक्त आशय की जानकारी देते हुए प्रकाश पब्लिक इंटर कॉलेज के प्रबंधक एवं प्रकाश हॉस्पिटल के निदेशक जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय बाबू यादव ने संयोजक में यह कार्यक्रम उनके विद्यालय पर आयोजित होगा पार्टी कार्यकताओं से उन्होंने अपील की है कि नवनिर्वाचित सांसद के अभिनंदन समारोह में इंडिया गठबंधन के सभी समर्थक कार्यकर्ता गणमान्य लोग उपस्थित होकर नवनिर्वाचित सांसद के अभिनंदन समारोह को सफल बनाने की अपील की है।

दहेज हत्या के दो आरोपी पुलिस के हत्थे चढ़े

अखण्ड भारत संदेश

मांडा। बीते माह दहेज प्रताड़ना से क्षुब्ध विवाहिता ने फांसी लगाकर खुदखुशी कर लिया था। मृतका के पिता की तहरीर पर दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज कर पुलिस मामले की जाँच मे जुटी थी। पुलिस ने घटना के वक्त आरोपित पति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। मांडा थाना क्षेत्र के गरेठा गाव निवासी अरशद कादरी की पत्नी रेशमी बानो का पति समेत ससुरालीजनों से दहेज को लेकर बीते 16 मई को विवाद हुआ था। इससे क्षुब्ध विवाहिता ने रात फांसी लगाकर खुदखुशी कर ली। मामले मे मृतका के पिता शेखावत निवासी बिसरेखी, सोनभद्र ने पति सास, ससुर, देवर व ननद समेत आधा दर्जन लोगो पर दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने घटना के वक्त आरोपी पति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। बाकी सभी आरोपी घर छोड़कर फरार चल रहे थे। वहीं मंगलवार की सुबह मांडा इंस्पेक्टर शैलेन्द्र सिंह के नेतृत्व मे दीघीया चौकी प्रभारी बाबूराम ने पुलिस टीम के साथ आरोपी सास अख्तरी बेगम व ससुर मुस्तफा अहमद को घर से दबोच लिया। पुलिस देख दोनो आरोपी भागने के प्रयास मे थे। लेकिन पुलिस की घेराबंदी मे फंस गये। पुलिस ने लिखपढ़ी की कार्यवाही के बाद दोनो आरोपियों को न्यायालय पेस किया। जहाँ न्यायालय के आदेश पर आरोपियों को जेल भेज दिया गया। इस गिरफ्तारी मे विवेक यादव, स्वेता साहित तमाम पुलिसकर्मी रहे।

समाज के प्रति समर्पित ज्ञान पुस्तकालय : महापौर

स्वर्ण जयंती का धूमधाम से मनाया गया 100 वा वर्ष

प्रयागराज। ज्ञान पुस्तकालय कीडगंज में स्वर्ण जयंती समारोह का 100 वां वर्ष धूमधाम से बनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि महापौर गणेश केसरवानी रहे, महापौर ने कहा यह बहुत ही सौभाग्य की बात है की स्वर्ण जयंती समारोह का 100 वां वर्ष हम लोग मना रहे हैं इतनी पुरानी संस्था को जीवित रखना आप जैसे समाज के प्रबुद्ध जन ही कर सकती है और आगे कहा कि ज्ञान पुस्तकालय समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित है और कीट गंज की शान है जो प्रयागराज गौरवान्वित कर रही है कार्यक्रम के आयोजक राजेश गुप्ता एवं गोल्डी साहू रहे कार्यक्रम में पार्षद मुकेश कसेरा राजेश केसरवानी, बबली साहू, संगम लाल ,राकेश गुप्ता, अनिल गुप्ता, राज बाबू गुप्ता आदि आदि संस्था के लोग उपस्थित रहे।

जेष्ट मास के तीसरे मंगलवार को हनुमान जी की पूजा कर भक्तों ने लिया आशीर्वाद

सहसों। जेष्ठ माह के तीसरे मंगलवार को क्षेत्र के भक्त श्रद्धालुओं ने घरों में तथा मंदिरों में भगवान राम के परम भक्त हनुमान जी की पूजा आराधना कर मनोवांछित फल की कामना करते आशीर्वाद प्राप्त किए। इसी प्रकार सहसों बाजार स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर में सुबह से ही भक्त श्रद्धालु नर नारियों ने हनुमान जी को जल फूल, धूप दीप, नैवेद्य, सिंदूर तेल आदि के साथ विधि विधान पूजा अर्चना एवं आरती कर फल प्राप्ति हेतु हनुमान जी का आशीर्वाद लिए। तत्पश्चात भक्तों में प्रसाद का वितरण भी हुआ। इस अवसर पर पंडित दिनेश चंद्र तिवारी एवं आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री ने बताया कि जेष्ठ माह के प्रत्येक मंगलवार को श्री हनुमान जी की पूजन अर्चन एवं दर्शन का विशेष महत्व है। इस समय जो भी भक्त हनुमान जी की तन मन एवं भक्ति से पूजन अर्चन विधान पूर्वक करता है उनको हनुमान जी की कृपा आशीर्वाद के साथ सर्व सिद्धि योग की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि मंगलवार के दिन हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए उनकी पूजा में चमेली के तेल में मिश्रित सिंदूर, तुलसी एवं गुलाब की माला चढ़ाकर पूजन अर्चन करना चाहिए एवं चना दाल, गुड, बेसन का लड्डू तथा पूड़ी का भोग लगाकर आरती करनी चाहिए जिसे हनुमान जी अति प्रसन्न होकर मनोवांछित फल का आशीर्वाद देते हैं। उन्होंने कहा हनुमान जी की विधि विधान पूर्वक दर्शन, पूजन, अर्चन से इच्छित फल की प्राप्ति होती है हनुमान जी की कृपा अपने भक्तों पर सदा बनी रहती है।

मुख्यमंत्री जी से हरियाली सुरक्षित रखने की मांग

अखंड भारत संदेश

सिर छुपाने और राहत पाने के लिए पेड़ों बगीचों की तलाश में भटक रहे मानव पशु पक्षी

कोरांव। हरियाली को तबाह करने से रोक लगाने में नाकाम संबंधित विभाग का खामियाजा अब तेज धुप गर्मी में मानव जीवन से ले कर पशु पक्षियों तक को भुगतना पड़ रहा है। वर्ना एक जमाना वह भी था कि सारा दिन लोग बाग बगीचों हरे भरे पेड़ों के निचे बीता लेते थे। और गर्मी से राहत मिलती थी। किंतु जीतना सड़कों का विकास हुआ उसमे हरे भरे पेड़ों को अधाधुंध काटने की अनुमति दी गई और लकड़ी माफियाओं को उसी आंड में हरे भरे पेड़ों को भी साफ करने की दी गई आजादी से आज शुद्ध जलवायु ऑक्सीजन के लाले पड़ गए हैं। जिससे मानव जीवन कष्ट मय हो गया है। उल्लेखनीय है कि सामाजिक वानिकी वन प्रभाग और आरक्षित वन प्रभाग वन विभाग उत्तर प्रदेश सरकार ने हरे पेड़ों को जो छूट प्रजाति के हैं उन्हे काटने परिवहन करने की छूट दे दिए जाने से प्रतिबंधित पेड़ों को भी कुकुरमुत्तों की तरह स्थापित मनमाने आरा मशीनों के मालिकों ने भी लकड़ी माफियाओं के जरिए हरे भरे पेड़ों को निशाना बनाया जिससे शीशम, नीम, आम, महुआ के बाग छूट प्रजाति के पेड़ों जैसे सेमर, बांस,आदि तथा वन वृक्ष प्लास, जामुन, सरई एक एक जिगना, सिद्ध, परसिध, महुलाईन, घोठर, केकड़, पाकड़, तेंदू, आंवला, कटार, हर सिंगार, खैर, फिटकिरी, धव, मेढ़ी, बहेर, चिरोंजी,आदि प्रजाति एवम वनौषधियां दुर्लभ प्रजाति के पौधे वनस्पतियां लकड़ हारों और खनन करने वालों की भेंट चढ़ गए। इसी तरह वन्य प्राणी जैसे शेर, हिरण, साभर, भालू, बिगवा, शाही, शियार, वन बिलार, बारह सिंघा, वानर, लंगूर का भी पलायन हो गए। इसी तरह मोर, वन चिरैया, धनेश, वन मुर्गी, तीतर, बटेर, हारिल, धौडेल, खरगोश आदि भी दुर्लभ हो गए। प्राकृतिक वन पर्वतों के पेड़ पौधों को निरंतर लोग काट काट कर खेती के उद्देश्य से दूर दूर से लोग जाकर कोराव के जंगलों में डेरा जमा कर बरबादी का कार्य धड़ल्ले से कर रहे हैं। इस दिशा में वन विभाग के अफसरों ने भी कार्यवाही की रोक थाम की किंतु राजस्व विभाग के कुछ लफड़ों से वन क्षेत्र फल का नाश नहीं रुक पा रहा है। और अवैध भू खनन और कटान को रोक पाना असम्भव दिख रहा है। प्रयागराज के कोरांव वन रेंज में स्थित देवघाट का जंगल एक जिसमें हजार बीघा जमीन को नशबंदी कार्यक्रम में भाग लेने वाले लोगों को तत्कालीन जिला प्रशासन ने व्यापक पैमाने पर पट्टे दे दिए थे। जिस कारण बिना नाप जोख पैमाइस के जो जहां पाया बस गया और खन खोद कर कब्जा कर लिया।

जगलों में जा कर बसे लोग भी इस बरबादी के हैं जिम्मेदार

ज्यादातर बिना पट्टे के ही लोग बस कर जमीनें कब्जा कर ली और अवैध कटान कर जगलों की बरबादी कर दी। इसमें राजस्व लेखपाल भी मालामाल हुए। जमीन किसी की पट्टा किसी और के नाम भू अभिलेख में किसी और का नाम अंकित कर अवैध कमाई की। जिससे वन विभाग के लोग भी तमाशबीन बने रहे असहाय रहे। और जंगल उजड़ता रहा। आज स्थिति यह है कि जितने लोग पट्टे के नाम पर बसे हैं जंगल नष्ट कर खेती कर रहे हैं उनकी या तो जमीन उनके नाम है भी नहीं यदि हैं भी तो उक्त भूमि कहीं और है और कब्जा कहीं और किए हैं। ऐसे लोग नई बस्ती के नाम पर बस कर आरक्षित सुंदर रमणीक प्राकृतिक वन पर्वतों को वन संपदाओं को नष्ट कर रहे हैं।

वन विभाग, राजस्व, माइंस, पुलिस विभाग की जरूरत

इसमें राजस्व प्रशासन,वन विभाग,पुलिस विभाग,की संयुक्त टीम ही कुछ नियंत्रण कर सकती है। अन्यथा जंगल निरंतर बर्बाद बीरान होता जा रहा। और वनाधिकारी मूक दर्शक बने रहेंगे। यही स्थितियां यूपी एमपी सीमा के वन अंचलों की है जहां अधाधुंध माइंस विभाग की मेहरबानी से अवैध खनन और कटान जारी है।

त्यौहार के मद्देनजर लालापुर थाने मे पीस कमेटी की बैठक संपन्न

बारा/प्रयागराज। आगामी ईद उल अजहा (बकरीद) के त्यौहार को सकुशल संपन्न कराये जाने के लिए मंगलवार को लालापुर थाने मे पीस कमेटी की बैठक बुलाई गई। बैठक की अध्यक्षता कर रहे लालापुर थाना प्रभारी अजय मिश्रा ने उपस्थित लोगों से अपील करते हुए कहा कि हर साल की तरह कुबार्नी का त्योहार इस वर्ष भी मनाया जाएगा साथ ही खुले मे कुबार्नी बिल्कुल नहीं दी जाएगी। किसी भी तरह की अव्यवस्था की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। शांति भाव व अमन चैन से त्यौहार संपन्न हो। थाना प्रभारी अजय मिश्रा ने कहा कि त्यौहार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न होना चाहिए यदि किसी ने अराजकता फैलाने की कोशिश की तो सम्बंधित के खिलाफ कठोर कार्रवाई कर सलाखों के पीछे भेज दीजियेगा। बैठक में थाना प्रभारी अजय मिश्रा, एसएसआई रामबहादुर साहनी, एसआई कलीम अहमद, एसआई बलिराम कुमार, ग्राम प्रधान लालापुर शंकरलाल पाण्डेय, ग्राम प्रधान नौढ़िया सूरज शुक्ला, ग्राम प्रधान, पण्डुआ दीपेश मिश्रा, ग्राम प्रधान अमिलिया राजू उपाध्याय सहित समस्त ग्राम प्रधान एवं धर्म गुरु, एवं क्षेत्र के सम्मानित नागरिकों ने भाग लिया।

गोष्ठी आयोजित कर पं. बिस्मिल को जयंती पर लोगों ने किया याद

अखंड भारत संदेश

सहसों। देश के महान क्रांतिकारी, बलिदानी, वीर सपूत पंडित राम प्रसाद बिस्मिल को सहसों में मंगलवार को गोष्ठी आयोजित कर लोगों ने उनके जयंती के अवसर पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शत-शत नमन कर याद किया। गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए विप्र समाज के सचेतक एवं महान विचारक पंडित शंभूनाथ तिवारी ने बताया कि पंडित राम प्रसाद 'बिस्मिल' भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रान्तिकारी विचार धारा के एक प्रमुख सेनानी थे। जिनको 30 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सरकार ने फाँसी दे दी। वे मैनपुरी षड्यन्त्र व काकोरी-काण्ड जैसी कई घटनाओं में शामिल होकर फिरंगियों को लोहा मनवा दिए थे। राम प्रसाद बिस्मिल हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के सदस्य रहते कई बार फिरंगियों के मंसूबों पर पानी फेरते हुए उनके इरादों का दमन किया। वह मां भारती की आन बान शान की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की बाजी लगाकर बलिदान हो गए। उन्होंने कहा हम सब ऐसे वीर सपूत महान क्रांतिकारी शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल को उनके जयंती पर एक बार फिर श्रद्धा सुमन के साथ याद करते हुए शत शत नमन करते हैं। गोष्ठी की अध्यक्षता नरेंद्र कुमार पांडे ने किया। गोष्ठी में प्रमुख रूप से चिंतामणि शुक्ला, चक्रधर द्विवेदी, विजय कुमार तिवारी, तेज प्रताप सिंह, जय प्रकाश शुक्ला, आदर्श तिवारी, सागर सिंह एवं फूलचंद साहू सहित आदि लोग नमन करते उपस्थित रहे।

भीषण गर्मी से बाइक सवार बेहोश प्राथमिक उपचार के हुआ रवाना

मऊआइमा। इन दिनों शरीर को झुरसा देने वाली पड रही गर्मी से बाइक सवार चकरा कर गिरने से चोटिल हो गया। उपचार के बाद घर गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मऊआइमा के ग्राम अमानगंज के निकट फोरलेन पर प्रतापगढ़ के चिलबिला से बाइक से प्रयागराज जा रहा युवक मोहम्मद नसीम 25वर्ष चकरा कर गिर पडा जिससे उसको मामूली खरौंच आयी। बताया गया है कि वह एक अस्पताल में उपचार के बाद लेटा रहा।जब तबीयत ठीक हुई तो तब जा कर शाम के समय प्रयागराज न जाकर चिलबिला अपने घर वापस चला गया।

डीएम ने किया निराश्रित गोवंश आश्रय स्थलों में व्यवस्थाओं के सम्बंध में जनपद स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति की बैठक

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने गोवंशों में होने वाले खुरपका, मुंहपका, गलाघोटू सहित अन्य बीमारियों की रोकथाम के लिए शत-प्रतिशत टीकाकरण का कार्य समय से पूर्ण कराये जाने के दिए निर्देश

जिलाधिकारी ने निराश्रित गोआश्रय स्थलों पर सभी आवश्यक व्यवस्थायें चुस्त-दूरूस्त बनाये रखने के दिए निर्देश

प्रयागराज। जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल मंगलवार को संगम सभागार में जनपद स्तरीय अनुश्रवण, मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति की बैठक करते हुए निराश्रित गोवंश आश्रय स्थलों में व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि जिन गौशालाओं में बरसात के समय में जल-जमाव की समस्या की सम्भावना हो, उनको तत्काल ठीक करा लिया जाये, जिससे कि बरसात के समय में वहां पर जल-जमाव की स्थिति न होने पाये। जिलाधिकारी ने निराश्रित गोआश्रय स्थलों पर पीने के पानी, हरे चारे, प्रकाश, टीन शेड, साफ-सफाई सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थायें चुस्त-दूरूस्त बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने खण्ड विकास अधिकारियों को उनके क्षेत्र में स्थित निराश्रित गो-आश्रय स्थलों में सभी आवश्यक व्यवस्थाओं की जांच कर उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने बरसात के समय में गोवंशों में होने वाले खुरपका, मुंहपका, गलाघोटू सहित अन्य बीमारियों की रोकथाम के लिए शत-प्रतिशत टीकाकरण समय से पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने पशुचिकत्साधिकारियों को नियमित अंतराल पर निराश्रित गोवंश आश्रय स्थलों का भ्रमण कर संरक्षित गोवंशों का स्वाथ्य परीक्षण करते रहने के निर्देश दिए है। उन्होंने गोवंशों का शत-प्रतिशत टैगिंग का कार्य पूर्ण कराने के लिए कहा है। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी श्री भोलानाथ कनौजिया, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी श्री अनिल सिंह, उप पशुचिकित्साधिकारियों, खण्ड विकास अधिकारियों के अलावा अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

डॉ अर्चना दुबे को योग और एक्यूप्रेशर की उपाधि

अखंड भारत संदेश

देश की प्रथम महिला को एक्यूप्रेशर और योग की उपाधि

प्रयागराज। विगत तीन दशकों से ज्यादा समय से एक्यूप्रेशर,योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की सेवा दे रही अखंड चैरिटेबल ट्रस्ट के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्षा, विश्व संवाद परिषद योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रकोष्ठ के उत्तर प्रदेश की अध्यक्षा के डॉ अर्चना दुबे को श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय देहरादून डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी योग एवं एक्यूप्रेशर विज्ञान की उपाधि प्राप्त की। डॉ अर्चना का शोध प्रबंध का शीर्षक महिलाओं के पी०सी०ओ०डी० समस्या पर योग एवं एक्यूप्रेशर प्रभाव का अध्ययन पर दिया गया। भारतवर्ष की पहली महिला जो एक्यूप्रेशर पर पीएचडी की। यह जानकारी विश्व संवाद परिषद (योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रकोष्ठ) के राष्ट्रीय अध्यक्ष योगाचार्य डॉ रमेश चंद्रा ने यहां दी है। डॉ ऑफ फिलॉसफी योग एवं एक्यूप्रेशर पी.एच.डी. सम्मान पाने पर विश्व संवाद परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष संस्थापक डॉ श्याम पचौरी, राष्ट्रीय महासचिव (योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रकोष्ठ) प्रो डॉ नवीन सिंह,प्रो डॉ सिया प्रताप सिंह,योग गुरु सुनील सिंह, योगाचार्य डॉ नवदीप जोशी, श्री एवं श्रीमती काबरा, डॉक्टर अंतिम कुमार जैन,,डॉ सतेंद्र मिश्र, डॉ एस.के. अग्रवाल, डॉ रश्मि, सीमा शर्मा, डी. आर. चौधरी, सिद्धार्थ चौधरी, गुरु प्रकाश शर्मा, प्रेरणा, मनीषा सिंह, उर्वशी उपाध्याय नमिता प्रजापति एसके शुक्ला, अनुपम सिंह आदि योग एवं एक्यूप्रेशर चिकित्सक एवं सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बधाई दी है।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर नगर आयुक्त ने जनता की सुनी समस्याएं

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज, चन्द्रमोहन गर्ग द्वारा मंगलवार को अपने कार्यालय में जन सुनवाई करते हुए नगर निगम में आये हुए फरियादियों की शिकायतों को सुना गया। जिसमें कुल 41 शिकायतें प्राप्त हुई। जनशिकायतों के अविलम्ब गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण कराये जाने हेतु नगर आयुक्त द्वारा सम्बन्धित अधिकरियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये, और यह भी निर्देशित किया गया कि गुणवत्ता पूर्ण शिकायतों का निस्तारण में किसी भी प्रकार की शिथिलिता न बरती जाय।

ह्यसम्भवह्य जन सुनवाई बैठक के दौरान अपर नगर आयुक्त अरविन्द राय तथा दीपेन्द्र यादव, मुख्य कर निर्धारण अधिकारी पी0के0 द्विवेदी, उप नगर आयुक्त अनुपम शुक्ला, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डा0 अभिषेक सिंह, पशुधन अधिकारी डा0 विजय अमृत राज तथा मुख्य अभियन्ता विद्युत संजय कटियार, जलकल महाप्रबंधक गौरव कुमार, समस्त जोनल अधिकारी आदि अधिकारीगण उपस्थित रहें।

मां की मौत, अस्पताल में भर्ती कराकर बेटा हो गया फरार

अखंड भारत संदेश

काफी दिनों से बीमार चल रही थी महिला, अस्पताल में हफ्तों से भर्ती महिला की मंगलवार को मौत हो गई , महिला के शव को बेटी दामाद अस्पताल से ले गये

झूंसी। एक कलयुगी बेटे ने मां को अस्पताल में भर्ती कराकर गायब हो गया। हप्तों से भर्ती महिला की मंगलवार को मौत हो गई। पुलिस के हस्तछेप के बाद बेटी दामाद महिला के शव को अस्पताल से ले गए। नई झूंसी में रहने वाली सितारा बेगम के पति की मौत बहुत पहले हो गई थी। दो बेटियों की शादी कर वह अपने पुत्र सोनू के साथ रह रही थी। काफी दिनों से वह बीमार चल रही थी। हप्ते भर पहले अचानक उसकी तबियत ज्यादा खराब हो गई तो उसका पुत्र सोनू उसे त्रिवेणीपुरम स्थित एक अस्पताल में भर्ती करा दिया। इलाज के लिए पैसा न होने पर कुछ लोगो ने सहयोग किया करीब 12 हजार रुपया सोनू को दिया। बताते हैं कि मां के इलाज के लिए मिले पैसे को लेकर सोनू भाग गया। इसी बीच उपचार के दौरान सितारा देवी ने मंगलवार दम तोड़ दिया। अस्पताल संचालक ने मामले की जानकारी पुलिस को दी। तभी महिला की बेटी दामाद आ गए। सितारा देवी की मौत की जनकारी मिलने व अस्पताल का 70 हजार बकाया जानकर वह भी कन्नी काटने लगे। तब पुलिस के हस्तकछेप पर बेटी दामाद महिला के शव को लेजाकर अंतिम संस्कार किया। वही कुछ लोगो का कहना था कि इलाज के पैसे न मिलने पर हॉस्पिटल संचालक शव देने से इनकार कर रहा था।

मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में लाइब्रेरी समिति की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रायगराज। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में लाइब्रेरी समिति की बैठक कार्यालय स्थित गांधी सभागार में सम्पन्न हुई जिसमें सभी सम्बन्धित अधिकारियों की उपस्थिति में कुछ विशेष बिंदुओं पर चर्चा की गई। सर्व प्रथम प्रयागराज स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा लाइब्रेरी के जीर्णोद्धार हेतु कराए जा रहे विभिन्न कार्यो को शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश दिये गये। इसी क्रम में लाइब्रेरी के रिक्त पदों को भरने के लिए अध्याचन संबंधित चयन आयोग में भेजने पर भी सहमति बनी। महाकुंभ से संबंधित सभी अखबारों एवं पुस्तकों के संरक्षण एवं डिजिटाइजेशन हेतु एक प्रस्ताव बनाकर समिति के समक्ष प्रस्तुत करने पर भी चर्चा की गई।

नगर निगम के नवविस्तारित क्षेत्रों के 20 वार्डों में प्रति वर्गफुट मासिक किराया दरों का अन्तिम प्रकाशन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर निगम प्रयागराज, के नव-सृजित क्षेत्र में स्थित प्रयागराज विकास प्राधिकरण, आवास विकास कालोनियों के साथ-साथ प्राईवेट कालोनियों, आपर्टमेन्टों, संस्थाओं, बाजारों, फैक्ट्रीयों आदि पर वर्ष 2023-24 में किये गये मैनुअल सर्वेक्षण के आधार पर प्रस्तावित की गयी प्रति वर्गफुट मासिक किराया दरों का विगत वर्ष प्रकाशन करते हुए उनपर आपत्तियां आमत्रित की गयी थी। विभिन्न नागरिक संगठनों एवं भवन स्वामियों द्वारा प्राप्त करायी गयी आपत्तियों का जोनल अधिकारियों द्वारा सम्यक सुनवाई करते हुए यथोचित किराया दरें अन्तिम प्रकाशन हेतु प्राप्त करायी गयी हैं। इसके साथ ही कुछ मा0 पार्षदगण एवं नागरिकों द्वारा सभी क्षत्रों की आपत्तियां एक पत्र के माध्यम से करायी गयी थी जिनका मुख्यालय स्तर पर सम्बन्धित पार्षदगण की उपस्थिति में मुख्य कर निर्धारण अधिकारी द्वारा सुनवाई करते हुए निस्तारण सुनिश्चित करते हुए उक्त सभी विस्तारित क्षेत्र के 20 वार्डों के मासिक किराया दरों को अन्तिम प्रकाशन हेतु नगर आयुक्त, नगर निगम प्रयागराज को प्रतिवेदित की गयी जिससे समुचित नागरिक सुविधा प्राप्त प्राईवेट कालोनियों, आपर्टमेन्टों, संस्थाओं, बाजारों फैक्ट्रीयो औद्योगिक क्षेत्र, व्यवसायिक शिक्षण संस्थओं आदि पर कर की गणना करते हुए नोटिस आदि जारी करने हेतु नगर आयुक्त, नगर निगम प्रयागराज से अनुमोदनोंपरान्त अन्तिम रूप से प्रकाशित की जा रही है।

रोजगार मेले में 15 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

प्रयागराज। राजकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान, कटरा, प्रयागराज परिसर में मंगलवार को प्रातः 10:00 बजे से रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में निजी क्षेत्र की विभिन्न कम्पनियों द्वारा कुल 15 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। रोजगार मेले में कुल 97 बेरोजगार अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में कार्यालय के प्रभारी सहायक निदेशक (सेवा.) चन्द्र कान्त सिंह एवं मेला प्रभारी अधिकारी प्रशांत, सहा. जि.रो.स. अधिकारी गुलाब चन्द्र मौर्य तथा मेला प्रभारी मारूफ अहमद व कार्यालय के अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे। मेले में कैरियर काउंसलिग का कार्य के.के. कुशवाहा, अनु. द्वारा किया गया।

मुख्यमंत्री अभ्युदय योजनान्तर्गत निःशुल्क कोचिंग कक्षाओं में प्रवेश हेतु इच्छुक अभ्यर्थी 22 जून तक जमा कर सकते है आवेदन पत्र

प्रयागराज। मुख्यमंत्री अभ्युदय योजनान्तर्गत राजकीय इण्टर कालेज निकट मेडिकल चैराहा, प्रयागराज में संचालित यू०पी०एस०सी०/यू०पी०पी०एस०सी०, जे०ई०ई०/नीट/एन0डी0ए0/सी0डी0एस0 की निःशुल्क कोचिंग कक्षाओं में प्रवेश हेतु इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन पत्र कार्यालय जिला समाज कल्याण अधिकारी, विकास भवन, प्रयागराज में 22 जून, 2024 तक पूर्वान्ह 10.00 से अपरान्ह 04.00 बजे तक प्राप्त कर शैक्षिक एवं अन्य वांछित अभिलेखों की स्वाप्रमाणित छायाप्रतियों के साथ जमा कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये योजनान्तर्गत- कोर्स को-ऑर्डिनेटर हृदया नन्द यादव दूरभाष नम्बर- 09026755847 व 09807803054 पर सम्पर्क कर सकते हैं। यह जानकारी जिला समाज कल्याण अधिकारी, प्रयागराज ने दी है।

कार्यालय ग्राम पंचायत सोनाई, वि. ख. करछना प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/ग्राम पं. वि. अ./कोटेशन/ 2024-25 **टेण्डर/कोटेशन** दिनांक :11.06.2024

ग्राम पंचायत **सोनाई** में वित्तीय वर्ष 2024–25 में कराये जाने वाले कार्य, मनरेगा/15 वां वित्त/राज्य वित्त योजना अन्तर्गत ग्राम पंचायत **सोनाई** विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के लिए इच्छुक पंजीकृत फर्मो से अल्प कालीन निविदा आमंत्रित की जाती है, आकड़न/प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर प्राप्त आपूर्ति भाड़ा एवं कार्य की मजदूरी सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 12–06–2024 से दिनांक 26–06–2024 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं। नियम व शर्ते किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है , तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 27–06–2024 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेण्डर /कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 27–06–2024 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है। उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा, जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा, साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा। उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा। उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्ते लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु उचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत श्रम एवं सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूति की अवधि
1.	अनिल के घर से विनय के घर तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य 70 मीटर	4.00 लाख	6 माह
2.	नहर से विनय के घर तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य 80 मीटर	4.50 लाख	6 माह
3.	छत्रपाल के घर से मंदिर तक पटिया नाली व इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	5.00 लाख	6 माह
4.	मुन्नू के घर से चक्की तक नाली पटिया मरम्मत कार्य	2.00 लाख	6 माह
5.	हैण्ड पम्प रिबोर कार्य	3.00 लाख	6 माह
6.	हैण्ड पम्प मरम्मत कार्य	1.00 लाख	6 माह
7.	आंगनबाड़ी केन्द्र के पास बाउंड्रीवाल व इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	3.00 लाख	6 माह
8.	स्कूल में कायाकल्प कार्य	3.00 लाख	6 माह
9.	पंचायत भवन मरम्मत व अन्य कार्य	2.50 लाख	6 माह
10.	पक्की रोड से मुस्लिम बस्ती तक नाली व इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	3.00 लाख	6 माह

श्रीमती मंजू लता
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत सोनाई
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

संजीव कुमार श्रीवास्तव
सचिव
ग्राम पंचायत सोनाई
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

पांच माह से पुलिस भर्ती परीक्षा के अंतरीक्षक मानदेय की देख रहे हैं राह

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा 17 एवं 18 फरवरी 2024 को दो दिवसो के चार पालियां में उत्तर प्रदेश पुलिस आरक्षी परीक्षा संपन्न कराया गया था। इस परीक्षा हेतु सैकड़ो की संख्या में परिषदीय अध्यापकों को अंतरीक्षको के रूप में विभिन्न केंद्रों पर ड्यूटी लगाई गई थी। इन अंतरीक्षकों की ड्यूटी जिला मुख्यालय से लगभग 60 से 80 किलोमीटर की दूरी वाले केंद्रों पर लगा दी गई थी। इन दोनों दिनो की परीक्षाओं में परीक्षा से छूटने के बाद परीक्षार्थी एवं अंतरीक्षकों को लगभग 4 से 6 घंटे जाम से जूझते हुए अपने घर पहुंचे थे।बाद में पुलिस आरक्षी परीक्षा उत्तर प्रदेश सरकार ने निरस्त कर दिया परंतु परीक्षा में लगाए गए अंतरीक्षकों को पांच महीने बीत जाने के बाद भी मानदेय का भुगतान नहीं किया गया जिससे अंतरीक्षकों में काफी रोष व्याप्त है।अन्य परीक्षाओं में परीक्षा समाप्त होने के उपरांत तुरंत ही पारिश्रमिक नगद भुगतान के रूप में कर दिया जाता है। इस सम्बंध में प्राथमिक शिक्षक संघ धनूपुर के अध्यक्ष अफरोज अहमद ने शासन एवं प्रशासन से मांग किया है कि अति शीघ्र सभी का पारिश्रमिक दिलवाने का कष्ट करें अन्यथा की स्थिति में आगामी पुलिस आरक्षी पुनर्परीक्षा में हम सभी लोग अंतरिक्ष के कार्य का बहिष्कार करेंगे।

महापौर ने क्षेत्र में ग्रस्त नालियों का निरीक्षण कर अधिकारियों को दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अलोपीबाग चुंगी फ्लाईओवर बनने से मालाक राज क्षेत्र में नाली में जल भराव को देखते हुए वहां की जनता से लगातार शिकायत मिलने पर आज महापौर गणेश केसरवानी ने निरीक्षण किया क्षेत्र के ग्रस्त नाली को जल्दी से जल्दी पानी निकासी हेतु अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए ।महापौर ने कहा अलोपींबाग फ्लाईओवर के बनने से पानी का आवागमन भ्रष्ट हो गया है जिससे मलाकराज क्षेत्र वासियों को इस दुविधा का सामना करना पड़ रहा है । अधिकारियों से वातार्लाप कर एक-दो दिन में इस समस्या का निस्तारण हो जाएगा, तत्काल डबल पाइपलाइन और मोटर लगाकर पानी की निकासी चालू हो गई ।निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय पार्षद आकाश सोनकर, पूर्व पार्षद जगमोहन गुप्ता, सुभाष वैश्य अनुपम गुप्ता, जलकल विभाग के महाप्रबंधक कुमार गौरव, एक्सीएन संघ भूषण जी, एक्सीएन ग्रामीण, जेई ग्रामीण एवं शहरी उपस्थित रहे।

विभागीय कार्यों में लापरवाही पाये जाने पर डीपीआरओ व एडीओ पंचायत को लगी फटकार

जिलाधिकारी ने ग्राम्य विकास एवं पंचायत विभाग से सम्बन्धित योजनाओं/कार्यक्रमों की किया समीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में कैम्प कार्यालय के सभागार में ग्राम्य विकास एवं पंचायत विभाग से सम्बन्धित योजनाओं/कार्यक्रमों तथा जिला स्वच्छता समिति की बैठक सम्पन्न हुई। ग्राम्य विकास योजनाओं/कार्यक्रमों की समीक्षा में जिलाधिकारी ने जिला विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि मनरेगा कार्यो की मानीटरिंग की जाये, मनरेगा कार्यो के सम्बन्ध में जो भी शिकायते प्राप्त हो रही है उसका निस्तारण किया जाये। मनरेगा कार्य करने हेतु जो लोग सही हकदार है उन्हें

विकास कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक में बोलते जिलाधिकारी संजीव रंजन।

कार्य दिया जाये। विकास खण्डों के अन्तर्गत जो भी निर्माण कार्य कराये जाते है उसकी गुणवत्ता सुनिश्चित की जाये।

जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देशित किया कि कार्यो की स्वीकृति से पहले स्थल का निरीक्षण अवश्यक किया जाये, इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाये। तालाबों की खुदाई में विशेष ध्यान दिया जाये और तालाबों व झीलों में वर्षा के जल को संचय किया जाये। इसके उपरान्त बैठक में पंचायत विभाग से सम्बन्धित योजनाओं/कार्यक्रमों तथा जिला स्वच्छता समिति की बैठक सम्पन्न हुई। पंचायती राज विभाग के ब्लाकवार प्राप्तियों एवं व्यय के भुगतान के कार्यो की समीक्षा में पाया गया कि एडीओ पंचायत एवं डीपीआरओ द्वारा भुगतान के कार्यो में लापरवाही एवं उदासीनता बरती जा रही है जिस पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुये एडीओ पंचायत एवं डीपीआरओ को कड़ी फटकार लगायी और निर्देशित किया कि पंचायती राज विभाग के भुगतान के कार्यो में लापरवाही कदापि न बरती जाये अन्यथा की स्थिति में सम्बन्धित के विरूद्ध कार्रवाई की जायेगी। बैठक में वित्तीय वर्ष 2023-24 में चयनित 20 ग्राम पंचायतों में अन्त्येष्टि स्थल निर्माण की समीक्षा में बताया गया कि 03 ग्राम पंचायतों अन्त्येष्टि स्थल का निर्माण पूर्ण हो चुका है, जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि अन्त्येष्टि स्थल के निर्माण कार्य को जल्द से जल्द पूर्ण कराया जाये, लापरवाही कदापि न बरती जाये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहारा, जिला विकास अधिकारी राकेश प्रसाद, जिला पंचायत राज अधिकारी आलोक कुमार सिन्हा, खण्ड विकास अधिकारी, एडीओ पंचायत व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

रुचि यादव ने जेईई एडवांस परीक्षा में सर्वोच्य अंक प्राप्त किया

अखंड भारत संदेश

रुचि यादव।

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के जे आई सी आलापुर प्रतापगढ़ की इंटर की छात्रा रुचि यादव ने जे ई ई एडवांस परीक्षा मे सफलता का परचम लहराया। रुचि की इस सफलता ने विद्यालय के साथ अपने परिवार का नाम रोशन किया है रुचि अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता पिता को बताया। मालूम हो कि विकास क्षेत्र कालाकाकर के ग्राम पंचायत ऐठू पूरे लाल साहब निवासी कृष्ण प्रताप यादव की बेटी रुचि यादव जिसके पिता एक किसान व माता ग्रहणी हैं अपने मां बाप का सपना साकार करते हुए रुचि ने जे ई ई एडवास परीक्षा मे अच्छे अंक प्राप्त किया। रुचि का सपना है कि हम आई ए एस की तैयारी करेंगे और क्वाली फाई करेंगे रुचि की सफलता से गांव वाले काफी उत्साहित है सभी घर पहुंचकर रुचि के साथ उनके माता पिता को बधाई दे रहे है और रुचि की आगे की सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे है। जे आई सी आलापुर के प्रबंधक प्रवीण कुमार शुक्ला व समस्त स्टॉफ नन्दलाल तिवारी सहित ने रुचि के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए रुचि व उनके माता पिता को अपनी शुभकामनाएं दिया है।

सोनपुर की घटना को लेकर राष्ट्रीय परशुराम सेना ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

उच्च स्तरीय जांच कराये जाने की मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राष्ट्रीय परशुराम सेना के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने सोनपुर जेठवारा के मौलाना कांड पर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। साथ ही घटनाओं पर सख्त एतराज जताते हुए कार्यवाही की माँग की गई। राष्ट्रीय परशुराम सेना के अध्यक्ष प्रदीप शुक्ला के नेतृत्व में सैकड़ों अधिवक्ता व परशुराम सेना के कार्यकर्ताओं ने घटना में निर्दोष लोगों को आरोपी बनाए जाने और घटना के बाद वहाँ के हिंदू परिवारों के घरों में की गई तोड़फोड पर आक्रोश व्यक्त किया।अध्यक्ष ने कहा कि घटना के बाद वहाँ के हिंदू परिवारों

जिलाधिकारी को ज्ञापन देते राष्ट्रीय परशुराम सेना के पदाधिकारी।

के घरों में की गई तोड़फोड़ और पत्थरबाजी करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाए। इस दौरान उन्होंने जिलाधिकारी से उच्च स्तरीय जाांच की मांग करते हुए किसी भी राजनीतिक दल को वहां जाने से रोके जाने की मांग की। जिलाधिकारी ने सभी माँगों पर विचार करने का राष्ट्रीय परशुराम सेना को भरोसा दिया है। इस दौरान परशुराम सेना के प्रदेश अध्यक्ष अभिषेक तिवारी, जिलाध्यक्ष अनिल पांडे, मनोज दूबे, संजय शुक्ला, एडवोकेट मुरारी मिश्रा, पवन मिश्रा, सुनील मिश्रा, पंकज पांडे, धर्मराज सिंह, गुड्डू उमरवैश्य, विनय सिंह, अखंड सिंह समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

बेटे को पुलिस ने पकड़ा, मां की हालत बिगड़ी, भर्ती

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पूरे देवयानी गांव में एक युवक को पुलिस पड़कर ठाणे उठा ले गई इसके बाद युवक के मन की तबीयत खराब हो गई उसे इलाज के लिए सीएचसी पट्टी में भर्ती कराया गया। कढ़ाई थाना क्षेत्र के पूरे देवयानी गांव के जलालुद्दीन थाने का हिस्ट्री सीटर है। मंगलवार को उसके बेटे सलमान की एक शिकायत पर पुलिस उसे पकड़ने उसके घर चली गई। जिसे लेकर पुलिस थाने गई। इधर सलमान की मां रुकसाना की तबीयत अचानक खराब हो गई। उसके सीने में दर्द होने लगा। परिजनों को लगा कि इसका हार्ट बैठ जाएगा। परिजन आनन फानन में सीएससी पट्टी ले आए। जहां उसका इलाज किया गया। इस संबंध में मगरौरा चैकी इंचार्ज भूपेश सिंह से बात की गई तो उन्होंने कहा कि एक शिकायती प्रार्थना पत्र मिला था। जिसकी जांच के लिए युवक को उसके घर से उठाया गया है। पूछताछ की जा रही है। अन्य विधिक कार्यवाहिया की जाएंगे।

मौलाना फारुक के अपराधियों पर होगी कड़ी कार्यवाहीः सांसद

फारुक के घर पहुंचकर डा0 एसपी पटेल ने जताई संवेदना, दिया भरोसा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जमीयत उलेमा के जिला महासचिव व मदरसा संचालक मौलाना मोहम्मद फारूक की हत्या की खबर सुनकर समाजवादी पार्टी के सांसद एसपी सिंह पटेल परिवार को सांत्वना देने सोनपुर जेठवारा में पहुंचे और मौलाना के बड़े बेटे मौलाना मामून, मौलाना अरसद, मौलाना असद को सांत्वना दी कहा कि वह उनके साथ हैं, हर संभव मदद की जाएगी। उन्होंने डीएम एसपी से बात कर मामले में उचित कार्रवाई कर पीड़ित परिवार की मदद की बात की।

इस मौके पर मौजूद पट्टी विधायक राम सिंह पटेल ने कहा कि अगर जल्द से जल्द गुनहगार

मौलाना के घर पर मौजूद सांसद डा0 एसपी पटेल।

नहीं पकड़े जाएंगे तो समाजवादी पार्टी धरने के लिए तैयार है और उन्होंने कहा की एक नेक दिल मनपसंद हर दिल अजीज मौलाना की इस तरह दर्दनाक हत्या कर दी जाएगी, यह सोच कर भी रुह कांप जाती है। इस मौके पर लक्ष्मणपुर के पूर्व ब्लॉक प्रमुख पति मोहम्मद हफीज उर्फ (फिज्जू भाई) ने कहा कि हर संभवः मदद मौलाना के परिवार की जाएगी। इसके बाद समाजवादी पार्टी के सांसद शिवपाल सिंह पटेल लोहंगपुर के विकास पुत्र कमलेश तथा बहरा जोगीपुर बद्रीनाथ पुत्र नाथू राम दलित युवकों की हत्या कर दी गई थी उनके परिवार से भी मिलकर शोक व्यक्त किया और परिवार को हर संभव मदद का आश्वासन दिया। इस मौके पर समाजवादी पार्टी के जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी, जिला उपाध्यक्ष जावेद खान, विधानसभा विश्वनाथगंज अध्यक्ष अहमद अली, सोनपुर प्रधान मोहम्मद शकील, गुलफाम खान, मोहम्मद शमीम, अश्वनी सोनी, जोसेफ, मुख्तार अहमद, संजय सिंह, सोनू सिंह, सिटी अध्यक्ष मोहम्मद जकी, शफात अहमद, मोहम्मद हाई, मोहम्मद सज्जाद, मुन्ना ककरहा, अनिल यादव, जुनैद खान, समाजवादी पार्टी महिला सभा जिला अध्यक्ष शांति सिंह, मीडिया प्रभारी वकार अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

भगवान कृष्ण ने अपनी सारी लीलाएं बचपन में दिखाईः गंधेश्वर महाराज

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। भगवान कृष्ण ने अपनी सारी लीलाएं बचपन में ही दिखाई थी। जिसमें अपने मुख में मां को ब्रह्मांड दिखाया, उंगली पर पर्वत उठाना, पूतना का वध करना,व जमुना जी में कालिया नाग को सबक सिखाना जैसे तमाम लीलाएं भगवान ने बचपन में ही दिखाया।उनके जन्म के समय भी चमत्कार हुआ था।

उक्त बातें विकासखंड बाबा बेलखरनाथ धाम के शेखपुर अठगवा गांव में चल रही सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा के चैथे दिन कथा वाचक गंगेश्वर प्रसाद पांडे महाराज ने कहीं। उन्होंने कहा कि कि भगवान कृष्ण ने बचपन में ही सारी लीलाएं दिखाई।कान्हा की माखन चोरी से गांव के लोग परेशान रहते थे सब नटखट कान्हा की शिकायत लेकर मां यशोदा के पास जाते थे लेकिन जब प्रभु का मुखड़ा

भागवत कथा में मौजूद श्रद्धालु।

देखते थे तो अपनी शिकायत भूल जाते थे। और भगवान कृष्ण को ही देखते रहते थे। कथावाचक ने कहा कि कृष्ण की भक्ति में जो मनुष्य लीन है उसे संसार में किसी भी चीज की कमी नहीं रहती। इस दौरान मुख्य यजमान संतोष कुमार शुक्ला पत्नी कृष्णा देवी संग आए हुए अतिथियों का आभार प्रकट किया।इस दौरान सतीश चन्द्र शुक्ला, गिरीश चंद्र शुक्ला, अखिलेश कुमार शुक्ला, अशोक कुमार शुक्ला, प्रकाश शुक्ला, विकास शुक्ला सहित सैकड़ों महिलाएं पुरुष कथा का रसपान करने के लिए मौजूद रहे।

यूपी में जनता ने भाजपा के अहंकार और विश्वासघात पर किया चोटः प्रमोद तिवारी

सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल ने गठबंधन की मजबूती का दिया पैगाम

धन्यवाद यात्रा में सीएलपी नेता मोना ने कार्यकर्ताओं में भरा जोश

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कांग्रेस के प्रदेश व्यापी धन्यवाद यात्रा को लेकर यहां पार्टी के कैम्प कार्यालय पर कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में हाल के लोकसभा चुनाव में इण्डिया गठबंधन तथा कांग्रेस पार्टी के शानदार प्रदर्शन को लेकर कार्यकर्ता उत्साहित दिखे।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि लोकसभा के चुनाव में यूपी में बड़े पैमाने पर भाजपा की पराजय उसके अहंकार और जनता

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी।

से हर कदम पर विश्वासघात का नतीजा है। उन्होनें कहा कि इस चुनाव में कांग्रेस समेत गठबंधन के कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी और अखिलेश यादव के द्वारा संविधान की रक्षा तथा आरक्षण बचाने और संवैधानिक संस्थाओं के दुरूपयोग को लेकर गठबंधन के संघर्ष को जनता के बीच सही ढंग से रखा। जिले के नव निर्वाचित सपा सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल ने कहा कि भाजपा ने इस बार भी स्वयं के अल्पमत में होने के बावजूद सत्ता की भूख में जोड़तोड़ की सरकार बनायी है। उन्होनें कहा कि इण्डिया गठबंधन पूरी मजबूती से भाजपा की केन्द्र और राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों पर मुखर रहेगी। अध्यक्षता करते हुए क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि रामपुर खास के कार्यकर्ताओं की बदौलत ही कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व के समक्ष इस क्षेत्र का दशकों से मान बना हुआ है। संचालन मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बबलू, जिपंस लालजी यादव, रघुनाथ सरोज, भुवनेश्वर शुक्ल, हजरत मौलाना रहमानी मियां ने राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी, सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल व विधायक आराधना मिश्रा मोना को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर कार्यकर्ताओं की ओर से सम्मानित किया। वहीं विधायक मोना ने धन्यवाद यात्रा में शामिल कार्यकर्ताओं को पार्टी का प्रशंसा पत्र सौंपा। प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी ने कार्यकर्ताओं का स्वागत तथा ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष केडी मिश्र ने आभार जताया। सम्मेलन को सपा के महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी, भइयाराम पटेल, संजय सिंह पटेल, टीपी यादव तथा कांग्रेसी नेताओं ने संबोधित करते हुए गठबंधन की नीतियों पर प्रकाश डाला।

वृद्ध को तेज रफ़्तार बाइक सवार ने मारी टक्कर, दर्दनाक मौत

प्रतापगढ़। महेशगंज थाना क्षेत्र के राय असकरनपुर स्थित जितेंद्र गैस एजेंसी के पास दोपहर बाद करीब साढ़े चार बजे तेज रफ़्तार बाइक की टक्कर से 64 वर्षीय अठैसा निवासी भोला अली की मौत हो गई। बता दें कि भोला अली घर से साईकल से आजाद नगर बाजार जा रहे थे कि इसी दौरान गैस एजेंसी की ओर से अठैसा निवासी एक बाइक सवार ने तेज गति से वृद्ध भोला अली को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे वह घसीटते हुए दूर चले गए, टक्कर इतनी जोरदार थी कि मृतक भोला अली का हाथ टूट गया और सिर कई जगह से फट गया। हादसे के तुरंत बाद भोला अली को एंबुलेंस के माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुंडा ले जाया गया, जहां पर डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पारिवारिक कलह से युवक ने गोली मारकर की आत्महत्या

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पारिवारिक कलह के चलते युवक ने खुदकशी कर लिया। घटना की जानकारी होने पर जैसे ही हुई तो कोतवाली पुलिस व एडिशनल एसपी पूर्वी दुर्गेश कुमार, पट्टी सीओ आनंद राय,कोतवाल पट्टी आलोक कुमार व कोतवाल कंधई प्रदीप कुमार मौके पर भारी पुलिस बल के साथ पहुंच गए और शव का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला मेडिकल कॉलेज भेज दिया।

बता दें कि पट्टी कोतवाली क्षेत्र के पूरेभीखा गांव निवासी सुनील कुमार यादव (27) पुत्र रामलाल पारिवारिक कलह से ऊबकर घर

फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंचकर लिए सैंपल

से लगभग 500 मीटर दूर जाकर असलहे से सिर में गोली मार कर आत्महत्या कर लिया। सुबह जब गांव के लोगों ने खेत में पड़ी लाश को देखा तो घटना की जानकारी गांव में आग की तरह फैल गई। जैसे ही घटना की जानकारी पुलिस को हुई तो पुलिस महकमें के कई बड़े आलाधिकारी अधिकारी भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। एडिशनल एसपी दुर्गेश कुमार फॉरेंसिक टीम को भी मामले की तहकीकात के लिए मौके पर बुला लिए। फॉरेंसिक टीम विभिन्न कोणों पर घटना होने के अनदेसे को लेकर जांच पड़ताल किए। और कई सारे सैंपल अग्रिम जांच के लिए इकट्ठे किए। मृतक के पिता ने पुलिस को दिए तहरीर में बताया कि घटना के दिन पति-पत्नी के बीच कहा सुनी हुई थी लेकिन मामला यहां तक पहुंच जाएगा किसी को भरोसा नहीं था। मृतक के पिता ने बताया कि वह रोजी-रोटी के सिलसिले में मुंबई शहर में रहता है और कुछ दिन पहले घर आया था तभी से पति-पत्नी के बीच आपसी कहा सुनी होती रहती थी, लेकिन किसी को क्या पता था की ऐसी घटना कारित हो जाएगी।

सगे भाई ने भाई के खाते से उड़ाए छह लाख रुपये, दी तहरीर

प्रतापगढ़। बाघराय थाना क्षेत्र के तिवारी महमतपुर निवासी संतोष तिवारी धोखाधड़ी के शिकार हो गये। उनका आरोप है कि परिवार में घर के ही रिश्ते में लगने वाले सगे भाइयों ने धोखाधड़ी कूटरचित ढंग से उनके खाते से 6 लाख रुपए निकाल लिये। उन्होंने आरोप लगाया कि परिवार वाले कभी भी हमारे लड़के व पत्नी के साथ हमारी हत्या करवा सकते हैं। संतोष तिवारी ने बताया कि प्रयागराज के फेडरल बैंक में उसका खाता है। उनके खाते पर उनके सगे भाई की गंदी नजर है। इसी के चलते तीन जून से छह जून के बीच लगभग छह लाख रुपये आनलाइन खाता से निकाल लिया गया। मामले को लेकर पीड़ित ने बाघराय थाने में नामजद तहरीर दिया। थाना अध्यक्ष निकेत भारद्वाज ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ की कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

पैसेंजर की भ्रामक सूचना दिए जाने से घनचक्कर बने यात्री, वीपी ट्रेन का पल पल बदला प्लेटफार्म

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मां बेल्हा धाम प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन से बनारस को जाने वाली स्पेशल ट्रेन प्लेटफार्म तीन पर खड़ी है... उस पर नहीं है..! माइक से फिर आवाज आई ट्रेन चार पर खड़ी है... उस पर भी नहीं है। भाई साहब..मजाक बना रखा है आप लोगों ने...! यात्री की जान लोगे क्या...! ट्रेन के प्लेटफार्म की भ्रामक सूचना इस तरह से प्रसारित होने की वजह से मुसाफिर घनचक्कर बनकर इधर उधर भागते रहे। इस चक्कर में उन्हें काफी दिक्कतें आई।

रेलवे की गलती का खामियाजा भुगते यात्री

हुआ यूं कि मां बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन से बनारस जाने वाली पैसेंजर ट्रेन प्लेटफॉर्म तीन से जाने वाली है। यह सूचना एनाउंस से बार बार प्रसारित हो रही थी। यात्रियों ने देखा कि इस पर कोई ट्रेन नहीं है। उन्होंने एनाउंस कर रहे रेल कर्मी को इस बारे में बताया। कुछ पल बाद फिर से सूचना प्रसारित हुई। इस बार तीन के बजाय चार नंबर प्लेटफार्म से छूटने की सूचना थी। यात्री हड़बड़ी में पुल के माध्यम से भागते हुए प्लेटफार्म चार पर गए। लिपिक अशोक तिवारी ने बताया कि ट्रेन चार पर भी नहीं थी। यात्री गुस्से में फिर से एनाउंस कक्ष में गए और स्टाफ पर भड़क गए। बोले कि आपकी लापरवाही से लोगों को काफी दिक्कत हुई। बुजुर्ग, दिव्यांग को पुल से आने जाने में काफी परेशानी उठानी पड़ी। स्टाफ ने बताया कि उनको सूचना स्टेशन मास्टर ने दी है। उन्होंने बताया कि ट्रेन पांच नंबर है। यह सूचना सही है। यात्रियों का आरोप है कि इस तरह का खिलवाड़ यहां पर आए दिन होता हैं। कोई इनकी खबर लेने वाला नहीं है। पूरे कुएं में भांग पड़ी है।

गांव में सड़क न होने से परेशान ग्रामीणों ने किया धरना प्रदर्शन

पूर्व सांसद विधायक जिला पंचायत अध्यक्ष से सड़क बनाने की मांग करते-करते परेशान हो गए ग्रामीण

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पूर्व सांसद विधायक जिला पंचायत अध्यक्ष से सड़क की मांग करते-करते आक्रोशित ग्रामीणों ने धरना प्रदर्शन कर अपनी आवाज बुलंद की है गांव में सड़क न होने से एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड के वाहनों का लाभ मुसीबत के समय ग्रामीणों को नहीं मिल पाता है जिससे ग्रामीणों में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है इन जनप्रतिनिधियों ने ग्रामीणों को हमेशा छला है सरकार विकास की बात कर रही है लेकिन गांव के लोग आने-जाने के रास्ते को लेकर परेशान है। सिराथू तहसील के निधियावां ग्राम सभा के पाल मोहल्ले में नाली के निकास और रास्ते के निकासी ना होने की वजह से कई वर्षों से परेशान ग्राम वासियों ने मंगलवार को सिराथू तहसील में धरना प्रदर्शन कर सड़क बनाए जाने की मांग की धरना प्रदर्शन की जानकारी मिलते ही मौके पर तहसील दार ने काफी मशक्कत के बाद ग्रामीणों को समझाया और यह आश्वाशन दिया कि अपनी टीम को भेजकर जल्द से जल्द इस समस्या का हल निकालेंगी तहसीलदार के आश्वासन पर ग्रामीणों ने अपनी जिद को छोड़कर धरना प्रदर्शन खत्म किया इस मौके गांव के सैकड़ों लोग मौजूद रहे' ग्रामीणों ने कहा कि अब सवाल यह है कि सरकार कहती है कि हमने सभी रास्ते का चौड़ीकरण और नई रोड बनवाई है जब ग्राम वाशियों को गांव से निकलने के लिए ही रास्ता नहीं रहेगा तो इस हाईवे या एक्सप्रेसवे का क्या करेंगे।

भीषण गर्मी के दृष्टिगत सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित कराए : जिलाधिकारी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी राजेश कुमार राय द्वारा कार्यालय कक्ष में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ भीषण गर्मी के दृष्टिगत नगर निकायों में शुद्ध पेयजल एवं साफ-सफाई के सम्बन्ध में बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने भीषण गर्मी के दृष्टिगत सभी अधिशासी अधिकारियों को निर्देशित किया कि नगरीय क्षेत्र में कोई भी हैण्डपम्प खराब है तो उसे तत्काल ठीक कराया जाय तथा साफ-सफाई की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित रखी जाय। उन्होंने कहा कि जहॉ पर पानी की समस्या आ रही है, वहॉ पर पानी के टैंकर रखवायें जाये। उन्होंने नगर निकायों की नालियों की साफ-सफाई एवं खराब स्ट्रीट लाइटों को भी तत्काल ठीक कराये जाने के निर्देश दियें। जिलाधिकारी ने सभी ई0ओ0 को निर्देशित किया कि नगर निकायों में जो भी विकास कार्य कराये जा रहें है, उनमें से शेष रह गये कार्यों को गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध तरीके से पूर्ण करा लिया जाय। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रबुद्ध सिंह एवं सभी ई0ओ0 सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

न्यूज झरोखा

गौरा रोड भरवारी का जला ट्रांसफार्मर मचा हाहाकार

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी अंतर्गत कस्बा गौरा रोड का ट्रांसफार्मर फूक जाने से कस्बा में हाहाकार मच गया इस भीषण गर्मी में विद्युत आपूर्ति न होने से लोग पानी के लिऐ तरस गए वही मच्छरों की वजह से रात रात भर कस्बा गौरा रोड के लोग व्याकुल रहे। बता दे की इस वक्त विद्युत की आपूर्ति वा ट्रांसफार्मर फूकने से लोगों का जीना हराम हो गया है वही लोग पीने का पानी के लिऐ तरस गए है लोग पूरी रात विद्युत न होने से हाहाकार मचा हुआ है लोगों ने इस प्रचंड गर्मी में यथा शीघ्र ट्रांसफार्मर बदलवाने की मांग की है '

प्याऊ के नाम पर सरकारी संस्थाओं द्वारा ड्रामा

कौशांबी भीषण गर्मी में आम जनता की प्यास बुझाने का निर्देश लगातार सरकार भी दे रही है लेकिन सरकार के इस निर्देश के बाद भी स्वयंसेवी संस्था और सरकारी महकमें के जिम्मेदार ड्रामेबाजी तक सीमित है जनपद मुख्यालय मंझनपुर के विकास भवन के पास जल जीवन मिशन की ओर से जल सेवा केंद्र खोला गया है राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन का बैनर लगाते हुए जल जीवन मिशन का बाबा कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा विकास भवन के बाहर टेंट और बैनर लगा दिया गया है बैनर में बड़े-बड़े शब्दों में जल सेवा केंद्र लिखा है लेकिन जल की व्यवस्था नहीं है आखिर कैसा जल सेवा केंद्र है जल सेवा केंद्र में कहीं एक बूंद पानी की व्यवस्था नहीं है बैनर और टेंट लगाए जाने से भीषण गर्मी में आम जनता की प्यास कैसे बुझेगी यह सवाल खड़ा हो रहा है जल जीवन मिशन योजना में प्यास बुझाने के लिए सरकारी बजट पर लोगों की नजर खराब है कही हैंड पंप रिपेयर के नाम पर झूठा बिल लगाकर रकम निकाली जा रही है तो कहीं प्याऊ के नाम पर सरकारी रकम निकाली जा रही है लेकिन आम जनता को पानी नहीं उपलब्ध हो रहा है गर्मी के महीने में जिले के विभिन्न सरकारी कार्यालय सहित विकास भवन में कहीं लोगों को पानी के लिए मटका घड़ा रखकर पानी नहीं भराया गया है प्याऊ की व्यवस्थाएं नहीं की गई है जिससे फरियादी भी पानी के लिए भटक रहे हैं

अज्ञात वाहन बाइक सवारों को टक्कर मारकर फरार,बाइक सवार घायल

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के अझुवा भोला चौराहा के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग पर अज्ञात वाहन बाइक सवारों को टक्कर मार कर फरार हो गया, जिससे बाइक सवार घायल हो गए।मौके पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस ने घायलों को एंबुलेंस से उपचार हेतु भेज दिए है। घटनाक्रम के मुतबिक शिव शरण निवासी सराय अकिल बाइक से अभय ठाकुर निवासी खागा के साथ आज मंगलवार देर शाम जी एस निधि कौशांबी से कार्य समाप्त कर कानपुर जा रहे थे ज्योंहि भोला चौराहा के निकट पहुंचे पीछे से तेज रफ्तार वाहन टक्कर मारते हुए फरार हो गया दुर्घटना से मौके पर तमाम लोग इकट्ठा हो गए सूचना पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस ने एंबुलेंस बुलाकर घायलों को उपचार हेतु अस्पताल भेज दिया है घायलों में शिव शरण गंभीर घायल हैं वहीं अभय ठाकुर आंशिक रूप से घायल हुए हैं अझुवा चौकी पुलिस टक्कर मारने वाले वाहन की तलाश में जुट गई है

सड़क पर विक्रम ऑटो खड़ा करने से लगता है जाम

कौशांबी करारी कस्बे में मुख्य चौराहे के पास सड़क के चारों ओर डामर सड़क पर विक्रम ऑटो चालक द्वारा खड़ा कर सवारी भरने से जाम की स्थिति बनी रहता है यदि किसी राहगीर ने ऑटो विक्रम चालक को सड़क पर वहाब खड़ा करने से मना किया तो यह ऑटो और विक्रम चालक झगड़ा लड़ाई पर उतारू हो जाते हैं प्रतिदिन पुलिस कस्बे में पैदल भ्रमण करती है पूरे दिन चौराहे से थाना पुलिस का आना-जाना होता है लेकिन चौराहे की सड़क के पास सड़कों पर खड़े होने वाले वाहनों पर पुलिस टीम द्वारा कार्यवाही नहीं की जाती है जिससे आम जनता परेशान है

खलिहान की जमीन पर प्रधान कर रही निर्माण

कौशांबी सिराथू तहसील क्षेत्र के सौराई बुजुर्ग गांव में गाटा संख्या 298 राजस्व अभिलेखों में खलिहान दर्ज है इस भूमि पर पूर्व से भी कई लोगों ने कब्जा कर रखा है और बीते कुछ दिनों से ग्राम प्रधान पुष्पा देवी खलिहान की जमीन पर निर्माण कर रही है भूप्रबंधन समिति का सचिव लेखपाल खलिहान की जमीन पर निर्माण को नहीं रोक सका है मामले को लेकर एक अप्रैल को उप जिलाधिकारी सिराथू को ग्रामीणों ने शिकायती पत्र दिया था लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई जिस पर 11 जून को जिलाधिकारी से ग्रामीण मिले और शिकायती पत्र देते हुए ग्राम प्रधान और माफियाओ के कब्जे से खलिहान की जमीन खाली कराए जाने की मांग की है।

नाली विवाद में युवक को पीटा शिकायत

कौशांबी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के उमरपुर मजरा हुसैनमई गांव में मंगलवार की सुबह पड़ोसी ने नाली विवाद मे युवक को जमकर पीट दिया।पिटाई से उसको काफी चोटें आईं।मोहल्ले के लोगों ने बीच बचाव कर झगड़ा शांत कराया। घायल ने थाने जाकर मामले की तहरीर दी।तहरीर पाकर पुलिस शिकायत की जांच में जुट गई है। हुसैनमई के मजरा उमरपुर गांव निवासी रमेश कुमार पुत्र रामबहादुर मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करता है।उसने बताया कि पड़ोसी से उसका नाली का विवाद चल रहा है। जिसे लेकर वह अक्सर विवाद करता रहता है। पड़ोसी अपने कुनबे के साथ मंगलवार की सुबह घर के बाहर बहने वाली नाली को कब्जा करने की नियत से पाटने लगा।ऐसा करने से मना करने पर वह सभी युवक के साथ गाली गलौज करने लगे। गाली का विरोध करने पर उन्होंने रमेश को लाठी-डंडे से पीटना शुरू कर दिया।शोर सुनकर वहां पहुंचे लोगों ने बीच बचाव कर मामले को शांत कराया।घायल ने थाने जाकर घटना की तहरीर दी। तहरीर पाकर पुलिस शिकायत की जांच में जुट गई है।

इण्डिया गठबन्धन को मिली अपार सफलता पर कांग्रेस नेताओं द्वारा निकाली गयी धन्यवाद यात्रा

कौशाम्बी। लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन को अपार सफलता मिलने के बाद कांग्रेस नेता गदगद दिखाई पड़ रहे हैं और इंडिया गठबंधन को अपार सफलता के बाद मतदाताओं को धन्यवाद दिया गया है इसके लिए बकायदे कांग्रेस नेताओं द्वारा रैली का आयोजन किया गया है अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के शीर्ष नेतृत्व के निदेर्शानुसार इण्डिया गठबन्धन को मिली अपार सफलता के लिए 11 जून को चायल विधान सभा के बड़े गाँव पट्टी पर्वेजाबाद में कांग्रेस नेताओं द्वारा धन्यवाद यात्रा निकाली गयी जिसका नेतृत्व ज़िला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गौरव पांडेय ने किया गौरव पांडेय ने बड़े गाँव के कार्यक्रम में शामिल सभी कार्यकताओं का धन्यवाद किया कार्यक्रम में मुख्यरूप से पुर्व ज़िलाध्यक्ष तलत अजीम आदिल जाफरी सम्मू नैयर रिजवी राजनारायण पासी मोहम्मद आरिज ,मोहम्मद अब्बान, फैसल अली मोहम्मद सलाम , बिलाल करारी, बिनोद चौधरी , कादिर जाफरी धीरज शुक्ला उदय यादव सुरेंद्र शुक्ला सहित बड़ी संख्या में उपस्थित कांग्रेस कार्यकर्ताओ के द्वारा धन्यवाद यात्रा निकालकर इण्डिया गठबन्धन को लोकसभा में बड़ी जीत दिलाने पर धन्यवाद यात्रा में बड़े गाँव के सभी कार्यकताओं को धन्यवाद एवं बधाई दिया गया।

विधवा पेंशन पाने वाली महिला लाभार्थी डीबीटी एनपीसीआई अवश्य करायें

कौशाम्बी। महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित पति की मृत्युपरान्त निराश्रित महिला पेंशन (विधवा पेंशन) प्राप्त कर रहीं समस्त लाभार्थियों का निदेशालय द्वारा आधार बेस्ड पेमेंट किया जाना है, जिन लाभार्थियों के बैंक खातों में डीबीटी0/एनपीसीआई नहीं होगा उन लाभार्थियों को वित्तीय वर्ष 2024-25 के प्रथम तिमाही का भुगतान किया जाना संभव नहीं होगा। यह जानकारी जिला प्रोबेशन अधिकारी नीरज कुमार ने देते हुए अवगत कराया कि निराश्रित महिला पेंशन (विधवा पेंशन) प्राप्त कर रहीं समस्त लाभार्थी सम्बन्धित बैंक से अविलम्ब डीबीटी/एनपीसीआई तत्काल करा लें, जिससे ससमय पेंशन की धनराशि का भुगतान किया जा सकें।

समाजसेवी ने राहगीरों को पिलाया शरबत

कौशाम्बी। नगर पंचायत चरवा मे राना कुशवाहा ने मंगलवार को भीषण गर्मी से राहत के लिए राहगीरों और चरवा मार्केट के लोगो को ठंडा पानी और शरबत पिलाया अपने छोटे भाई और अन्य सहयोगियों और छोटे छोटे बच्चो के साथ चरवा चौराहे के पास ठंडे पानी और शरबत की छबील लगाई गई और आते जाते राहगीरों को शरबत ठंडा पानी पिलाया गया।

बरसात से पहले नालों-नालियों की सफाई का कार्य शुरू

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशांबी बरसात के मौसम में नगर पंचायत अझुवा में जल भराव ना हो इसके लिए नगर पंचायत ने तैयारी शुरू कर दी जिसके चलते नगर पंचायत अझुवा की नालों और नालियों की सफाई का कार्य तेजी से किया जा रहा है सफाई कर्मचारियों को निर्देश दिया गया है कि नालों और नालियों में कूड़ा जमा ना होने पाए जो भी व्यक्ति नाले नालियों में कूड़ा फेंके उन्हें चिन्हित कर नोटिस भेजने की कार्रवाई शुरू की जाए नगर पंचायत अझुवा में 12 वार्ड है जिनमे तमाम नाले नालिया है इनकी वार्ड वाइस सफाई का कार्य किया जा रहा है सफाई कर्मचारी दिन भर नालों और नालियों की सफाई कर रहे हैं जिससे बरसात के दौरान नगर में जल भराव की समस्या न होने पाए अधिशासी अधिकारी रश्मि सिंह ने बताया कि नगर पंचायत की नाली और नालों की सफाई करने को लेकर टीम बना दी गई है जो अपने-अपने क्षेत्र में सफाई के अलावा नाली और नाले की सफाई का काम देख रहे हैं सूचना के अनुसार नगर पंचायत के कुछ लोग अभी भी नालियों में कूड़ा व गंदगी को फेंक रहे हैं ऐसे लोगों को चिन्हित करने का आदेश दे दिया गया है नगर पंचायत के संबंधित जिम्मेदार द्वारा कर्मचारी के साथ मिलकर सफाई गंदगी का निरीक्षण किया जा रहा है लापरवाही बरतने वाले कर्मचारियों पर कार्रवाई की जाएगी।

आम रास्ता सहित गांव समाज की जमीन को जबरन किया जा रहा कब्जा

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के धमसेड़ा गांव में मकान का आम रास्ता सहित गांव समाज की जमीन को जबरन कब्जा किया जा रहा धमसेड़ा के जितेन्द्र कुमार पुत्र अशर्फी लाल के मकान के आम रास्ते के बगल में सरकारी खाली जमीन पड़ी है जिस पर लगा सरकारी हैन्डपम्प कई वर्षो से खराब पड़ा है उक्त जमीन को हड़पने के लिये गांव के धनराज सिंह हसं राज सिह शिवसागर विद्या सागर पुत्र बड़े लाल यादव वा मोहित सिह द्वारा हैण्डपम्प का सारा समान निकाल कर कबाड़ी के हाथ बेच लिया और उसी सरकारी जमीन में मकान निर्माण कर रहे है उसी के साथ आम रास्ते को भी दबंग घेरना चाहते हैं जितेंद्र के बिरोध करने पर दबंग पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी देते हुये बार बार गाली गलौज कर रहे है।घटना की सूचना जितेंद्र ने थाना चरवा व उपजिलाधिकारी चायल को दिया जिस पर उपजिलाधिकारी ने हल्का लेखपाल से जांच के उपरान्त अख्या रिपोर्ट मांगी जिस पर मौके पर लेखपाल सतीश सरोज पहुँचे और जांच किया अपनी रिपोर्ट में लेखपाल ने बताया कि जिस पर बड़ेलाल यादव का परिवार निर्माण कर रहें है यह गांव समाज की सरकारी जमीन है जो कानूनन निर्माण अवैध है। और बड़ेलाल के परिवार को निर्माण न करने हेतु रोक दिया जिस पर लेखपाल के जाने के बाद जितेंद्र को गाली गलौज करते हुये पथराव करने लगे जिससे जितेंद्र के परिवार में कई लोगों को चोटे आयी डायल 112 नम्बर को काल करके बुलाया जिस पर दबंग भाग गये मामले की सूचना थाने में दी गयी।रोक के बावजूद 04 जून को फिर दबंग निर्माण करने लगे जिस पर जितेन्द्र ने फिर डायल 112 नम्बर काल करके पुलिस बुलाकर कार्य को बन्द कराया पुलिस के जाने के बाद उक्त दबंग एकजुट हो कर जितेन्द्र के ऊपर ईंट पथराव करने लगे मकान को तोड़फोड़ दिया जितेंद्र अपनी जान बचाने के लिए घर में घुस गया तब उसकी जान बची दबंग का हौसला इस कदर बढ़ा है कि डायल 112 पुलिस के जाने के बाद मोहित सिंह अपनी मा सुनीता देवी के साथ पिस्टल लेकर मौके पर फिर पहुँच कर गाली गालौज करते हुए जितेंद्र के घर में घुस गया उसकी पत्नी पूजा देवी को घसीटते हुए बाहर निकाल लिया और पिस्टल के बट से कई बार हाथ में मारा जिससे पूजा की चूडिया टूट गयी तथा पिस्टल के बट की चोट से खून बहने लगा फिर अपनी जान बचाने के लिए जितेंद्र ने डायल 112 नम्बर पर काल किया मौके पर पुलिस के पहुंचने के पहले से ही दबंग फिर भाग गये। घटना को डायल 112 पुलिस ने संज्ञान में लिया तथा थाने में भी सूचना दिया लेकिन उसके बाद भी दबंग पर कठोर कार्रवाई न होने से उनके हौसले बुलंद है और वह हम रास्ता और सरकारी जमीन को कब्जा कर विवाद की स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं पीड़ित परिवार में मामले की सूचना डाक के माध्यम से अधिकारियों को भेजी है।

जिला जेल में निरुद्ध महिला बंदी ने दिया बेटी को जन्म

जेल प्रशासन ने कार्यक्रम आयोजित कर बेटी का किया नामकरण, महिला बंदियों ने गाए सोहर गीत

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिला जेल मे निरुद्ध महिला बंदी ने एक बेटी को जन्म दिया है। बेटी के जन्म पर जेल प्रशासन ने उसके नामकरण का यादगार कार्यक्रम आयोजित कर उत्सव मनाया है। नामकरण संस्कार कार्यक्रम को आयोजित कर महिला बंदी के नवजात को गिफ्ट भी दिये गए।इस दौरान सामाजिक संगठन की महिलाओं एवं जेल में बंद महिला बंदियों ने मिलकर सोहर गीत गाए और अपनी खुशी का इजहार किया। जेल अधीक्षक अजितेश कुमार मिश्रा ने बच्ची का नामकरण भी किया। सैनी थाना में दर्ज मुकदमा अपराध संख्या 453/23 धारा 419, 420, 467, 468, 471 में महिला माया देवी पत्नी मंगल थाना सरधुवा जनपद चित्रकूट जिला जेल की महिला बैरक में निरुद्ध है,थाना पुलिस ने उसे 1 फरवरी 2024 को पकड़ कर जेल में दाखिल किया था। गिरफ्तारी के दौरान महिला 4 माह की गर्भवती थी।जेल की महिला बैरक में बंद माया ने 25 दिन पहले एक सुंदर की बेटी को जन्म दिया है। जेल में किलकारी गूंजने की बात जेल प्रशासन ने नियमतः बड़े अफसरों को दी। आला अधिकारियों ने महिला बंदी के मातृत्व सुख को बढ़ाने के लिए जेल में एक नामकरण समारोह का आयोजन करने का निर्देश दिया। जेल अधीक्षक अजितेश कुमार मिश्रा ने बताया कि जेल डीआईजी ए के श्रीवास्तव के निर्देश पर उन्होंने जेल मेनुवल के अनुसार एक नामकरण संस्कार कार्यक्रम का आयोजन किया है। इस कार्यक्रम में सामाजिक संगठन एवं जेल प्रशासन ने मिलकर महिला बंदी की बेटी के जन्म का उत्सव मनाया है उपहार भेंट कर उसके साथ खुशियां बांटी गई है,महिलाओं ने जेल की चहार दीवारी के भीतर सोहर भी गाया। कार्यक्रम में उन्होंने बच्ची का नाम कारण कर उसे ह्मानवीह्व नाम दिया है। जेल की मनोदशा को उबारने के लिए कार्यक्रम में बच्ची व उनकी मां को उपहार भेंट कर उसके साथ खुशियां बांटी गई।

5 घण्टे की कार्यवाही में 29 गाड़ियों अवैध परिवहन ओवर लोडिंग में पकड़ी गयी

अखंड भारत संदेश

प्रतिदिन 24 घंटे चले अभियान तो बालू के अवैध खनन और परिवहन का होगा बड़ा खुलासा

विभागीय अधिकारियों के साठगांठ से बालू के अवैध खनन परिवहन के मामले में विभागीय अधिकारियों पर कब होगी कार्रवाई

कौशाम्बी। जिले में बालू का काला कारोबार तेजी से पैर पसार चुका है विभागीय अधिकारी और थाना पुलिस के संरक्षण में बालू का अवैध खनन और परिवहन जिले में तेजी से हो रहा है जब कभी सूबे के मुख्यमंत्री या जिलाधिकारी ने कार्यवाही का निर्देश दिया तो कुछ घंटे में बड़ी तादाद में बालू के अवैध खनन और परिवहन में लगे वाहन पकड़े जाते हैं जिससे बालू के अवैध काले कारोबार का खुलासा होता है लेकिन कुछ घंटे कार्रवाई करने के बाद बालू के काले कारोबार को बेरोकटोक चलने के लिए छोड़ दिया जाता है जिससे बालू के धंधे में लगे माफिया अपने धंधे को बढ़ाते हैं और विभागीय अधिकारी भी मालामाल होते हैं आखिर प्रतिदिन 24 घंटे बालू के काले कारोबार को रोकने के लिए अभियान चलाकर इस धंधे से जुड़े माफियाओं की कमर तोड़ने का पूरा प्रयास जिम्मेदार विभाग द्वारा क्यों नहीं किया जाता है 5 घंटे के अभियान में कुछ वाहनों को पड़कर ड्रामेबाज तक बालू का काला कारोबार सीमित रह गया है बीती रात 5 घंटे के अभियान में एसडीएम ने 29 वाहनों को अवैध परिवहन और खनन में पड़ा है जिससे एक बार फिर विभागीय अफसरो के करनामें उजागर हुए हैं और विभागीय अफसर के कारनामे उजागर होने के बाद क्या इन विभागीय अधिकारियों पर कठोर कार्रवाई करते हुए इन्हें निलंबित कर माफिया को संरक्षण देने के आरोप में इन पर भी मुकदमा दर्ज कराया जाएगा या फिर 5 घंटे कार्रवाई करने के बाद फिर बालू के काले के कारोबार को बेखौफ चलने के लिए छोड़ दिया जाएगा बालू के काले कारोबार में लगे माफियाओं पर अभी तक 14 ए गैंगस्टर एक्ट की कार्यवाही कर उनकी अकूत संपत्ति नहीं जप्त की गई है। जिलाधिकारी के निर्देश पर अवैध खनन परिवहन के विरुद्ध अभियान चलाते हुये उप जिलाधिकारी मंझनपुर के द्वारा दिनांक 10 जून 2024 की रात्रि 9.30 बजे से लेकर दिनांक 11 जून 2024 के भोर 03 बजे तक टेंवा होते हुये राम नगर महेवा घाट तक भ्रमण के दौरान 02 ओवरलोड गाडिया टेंवा के पास, 18 कोल्ड स्टोरेज के पास व 09 रामनगर खनन क्षेत्र के बाहर कुल 29 गाड़ियों अवैध परिवहन ओवर लोडिंग में पकड़ी गयी मौके पर जिला खनन अधिकारी कौशाम्बी एवं सहायक परिवहन अधिकारी कौशाम्बी को बुलाकर उपरोक्त सभी ओवरलोड 29 गाड़ियों जिसमें से 08 ट्रैक्टर व 21 डम्फर को सीज कराया गया। सीज की गयी गाड़ियों पर परिवहन व खनन के नियमों का उल्लंघन पाये जाने पर नियमानुसार लगभग 23 लाख का अर्थदण्ड आरोपित किया गया। अवैध खनन एवं परिवहन पर प्रभावी रोकथाम हेतु इस प्रकार के आकस्मिक अभियान आगे भी चलाये जायेंगे।

चौकी थाना पुलिस के साथ साथ डायल 112 पुलिस भी कर रही बालू वाहनों से वसूली

कौशाम्बी। जिले मे पुलिसिया ब्यवस्था पर सुधार नही हो पा रहा है पग पग पर पुलिस कर्मियों द्वारा अवैध रुप से वसूली किया जाता है जब कि सूबे की योगी सरकार ने पुलिस ब्यवस्था को सुधारने का काफी प्रयास किया लेकिन भ्रष्ट पुलिस कर्मी अपने आदत को सुधारने का प्रयास तनिक भी नही करते शायद यही भ्रष्टाचारी के चलते उत्तर प्रदेश मे सरकार को करारी हार का मुह देखना पड़ा है। पिपरी थाना क्षेत्र मे इन दिनों पुलिस अवैध वसूली करने मे तनिक भी पहरेज नही करती कानून को दर किनार कर बालू के ओवर लोड वाहन से अवैध वसूली मे पुलिस मस्त रहती है चौकी थाना पुलिस के साथ साथ डायल 112 पुलिस भी बालू वाहनों से वसूली कर रही है जबकि आपात कालीन ब्यवस्था के लिये सरकार ने डायल 112 की नियुक्त किया है वह पुलिस लोधउर औधन के बीच चौराहे पुलिया के पास से कुछ दूरी पर अपनी बाईक खेत मे खड़ी कर शासन प्रशाशन के आखों मे धूल झोंककर बालू लदे डम्फर ट्रक वा ट्रैक्टर वाहने से अवैध वसूली करते दिखाई देती है भ्रष्ट पुलिस अवैध वसूली के चलते वर्दी को कलंकित करने मे कोई कोर कसर नही छोड़ रही है क्या योगी सरकार ऐसे पुलिस कर्मियों को दंडित कर कठोर कार्यवाही करेगी या फिर इसी तरह भ्रष्टाचार चलता रहेगा।

धारा प्रवाह गाली गलौज कर पीड़ितों पर रौब झाड़ने वाली पुलिस ने पीड़ित पर दर्ज कराया मुकदमा

महिला सिपाही के बिना महिला को पकड़ने गयी 112 डायल पुलिस ने ग्रामीणों के दबाव में महिला को छोड़ा

कौशाम्बी। डायल 112 पुलिस का आतंक जिले में बढ़ता जा रहा है जिससे आम जनता परेशान दिखाई पड़ रही है पीड़ित के साथ धारा प्रवाह गाली गलौज करना उनके साथ मारपीट करना नियम कानून के विरुद्ध गिरफ्तारी करना और फिर धन वसूली करके छोड़ देना डायल 112 पुलिस की आदत में शुमार हो गया है जिस मामले में डायल 112 पुलिस के कारनामों को पीड़ित परिवार में उजागर करना चाहा तो झूठी तहरीर बना करके पीड़ित परिवार के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा करके उनकी आवाज दबाने का प्रयास होता है गुलामीपुर के मामले को लेकर डायल 112 पुलिस की शिकायत पुलिस अधीक्षक से की गई है पीड़ित परिवार की मदद के लिए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने डायल 112 पुलिस स्थापित किया लेकिन डायल 112 की पुलिस पीड़ित परिवार की मदद करने के बजाय धारा प्रवाह गाली गलौज कर पीड़ित परिवार पर पुलिस का रौब झाड़ती दिखाई पड़ रही है डायल 112 पुलिस के कारनामे से पुलिस महकमें की वर्दी शर्मसार हो रही है। महिला पुलिस की उपस्थिति ना होने के बाद भी महिलाओं को पकड़ने के लिए डायल 112 पुलिस गुलामीपुर गांव पहुंच गई और महिला को पकड़ कर जबरिया पुलिस वाहन में बैठा लिया जिस पर ग्रामीणों ने विरोध किया ग्रामीणों के विरोध के बाद पुलिस वाहन से महिला को उतार कर उसके पिता को पुलिस वाहन में बैठा कर पुलिस लेकर चली गई है गाली गलौज का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हुआ हालांकि इसकी पुष्टि हम नहीं करते महिलाओं को पकड़ने और गिरफ्तारी के मामले में शासन का स्पष्ट निर्देश है कि महिला सिपाहियों के बिना महिलाओं को पकड़ कर पुलिस सिपाही ना ले जाए लेकिन उसके बाद भी महिलाओं को थाने ले जाने के मामले में डायल 112 की पुलिस ने जिस तरह से 03 जून को गुलामीपुर गांव में तत्परता दिखाई सिपाहियों ने कानून की धज्जियां उड़ा दी जिला कचहरी में अधिवक्ता अमन कुमार शर्मा निवासी बेरूवा थाना चरवा की पत्नी अपने मायके गुलमीपुर थाना सैनी गई हुई थी जहां अधिवक्ता की ससुराल में कुछ विवाद हुआ जिस पर डायल 112 पुलिस गुलामीपुर पहुंची और अधिवक्ता की पत्नी को गाली गलौज अभद्रता करते हुए जबरिया गाड़ी में बैठा लिया ग्रामीणों में विरोध किया तो महिला को उतार करके पुलिस वाहन में उसके पिता को बैठा लिया गया अधिवक्ता ने पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देते हुए बताया कि डायल 112 के दो सिपाहियों ने गांव के संदीप अनुज की मदद से गाली गलौज करते हुए घसीट कर महिला को पुलिस की गाड़ी में बैठा लिया है जिस तरह से डायल पुलिस धारा प्रवाह गाली गलौज कर रही है यह तो गुंडे जैसा बर्ताव कर रही है उस समय पुलिस की गाड़ी में महिला सिपाही नहीं थी हालांकि ग्रामीणों के बढ़ते दबाव के बाद गाड़ी में बैठाने के बाद महिला को पुलिस ने उतार दिया और महिला के पिता को पुलिस पकड़ कर ले गई अपने को फसता देख डायल 112 पुलिस ने पीड़ित परिवार पर ही मुकदमा दर्ज करा दिया अब इससे ज्यादा डायल 112 पुलिस का आतंक जिले में क्या कायम होगा।

संपादक की कलम से

प्रधानमंत्री मोदी के तीसरे कार्यकाल में भी जारी रहेगा बेरोजगारी संकट

प्रभावी आर्थिक विकास के बावजूद, देश के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी का संकट भयावह बना हुआ है, जो मोदी सरकार द्वारा 2014 से अपनाये जा रहे रोजगार रहित विकास मॉडल का प्रमाण है। लोकसभा के नतीजों ने पीएम मोदी को लोकसभा में बहुमत से वंचित कर दिया, जो उनके लिए और सरकार में एनडीए सहयोगियों के लिए भी एक सबक है। 2014 के बाद से जारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पहले दो कार्यकालों में अभूतपूर्व बेरोजगारी संकट उनके तीसरे कार्यकाल में भी जारी रहने की संभावना है, जब तक कि वर्तमान रोजगारहीन विकास मॉडल में बदलाव नहीं किया जाता। लगभग एक अरब कामकाजी आयु वर्ग की आबादी में से, पिछले कुछ वर्षों से रोजगार में लगे लोगों की संख्या लगभग 40 करोड़ के आसपास रही है, जो चिंता का विषय है। इस भयावह जमीनी हकीकत के बावजूद, प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार के अधिकारी दावा करते रहे कि बेरोजगारी दर में गिरावट आ रही है। यहां तक कि सरकार के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आंकड़ों से पता चला है कि 2022-23 के दौरान बेरोजगारी दर गिरकर 3.1प्रतिशत हो गयी है। हालांकि, गैर-सरकारी सीएमआईई के ताजा रियल टाइम आंकड़ों से पता चलता है कि बेरोजगारी 7-8प्रतिशत के आसपास मंडराती रही है। लोकसभा चुनाव 2024 के प्रचार के दौरान, जब बेरोजगारी मतदाताओं के बीच एक प्रमुख मुद्दा बन गयी, तो केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्रालय की सचिव सुमिता डावरा ने एक बयान दिया कि 2022-2023 में 30 मिलियन नौकरियां पैदा की गयीं और पिछले पांच वर्षों में 110 मिलियन से अधिक नौकरियां जोड़ी गयीं। इसका मतलब यह था कि मोदी सरकार ने देश के बेरोजगारी संकट को पहले ही हल कर दिया था, क्योंकि हर साल लगभग 20 मिलियन लोग ही भारतीय श्रम बाजार में प्रवेश करते हैं। इसका यह भी मतलब था कि मोदी सरकार ने एक साल में 30 मिलियन नौकरियां पैदा करके जरूरत से ज्यादा काम किया। डावरा ने यह बयान भारतीय रिजर्व बैंक के केएलईएमएस डेटाबेस के 2022-23 के अंतिम आंकड़ों का हवाला देते हुए दिया था, जो पूंजी, श्रम, ऊर्जा, सामग्री और सेवा क्षेत्रों में रोजगार सृजन और उत्पादकता के स्तर को ट्रैक करता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि डावरा के दावे का समर्थन केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्रालय के वार्षिक पीएलएफएस डेटा से भी नहीं होता है। यहां यह याद रखना जरूरी है कि नरेंद्र मोदी ने 2014 में अपने चुनाव प्रचार के दौरान हर साल 20 मिलियन नौकरियां देने का वायदा किया था, जो कभी पूरा नहीं हुआ, यहां तक कि हर साल जारी होने वाले सरकारी आंकड़ों के अनुसार भी नहीं। लेकिन अचानक मोदी सरकार के श्रम सचिव ने पिछले महीने मई में कहा कि पिछले साल 30 मिलियन नौकरियां पैदा हुईं। मार्च में ही मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंत नागेश्वरन ने कहा था कि यह मान लेना गलत है कि सरकार बेरोजगारी जैसी सभी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल कर सकती है। उन्होंने यह बयान नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) और मानव विकास संस्थान (आईएचडी) के संयुक्त प्रकाशन 'भारत रोजगार रिपोर्ट 2024: युवा रोजगार, शिक्षा और कौशल' के लॉन्च के दौरान दिया था। सीईए नागेश्वरन ने आश्चर्य जताया था कि सरकार 'खुद को और अधिक नियुक्त करने के अलावा रोजगार के मामले में क्या कर सकती है', उन्होंने कहा कि 'सामान्य दुनिया में, यह वाणिज्यिक क्षेत्र है जिसे नियुक्तियां करने की जरूरत है।' रोजगार सृजन पर मोदी सरकार का दृष्टिकोण काफी चौंकाने वाला था। यह स्पष्ट रूप से दशार्ता है कि अभूतपूर्व बेरोजगारी संकट को हल करना मोदी सरकार की प्राथमिकता नहीं थी। पूर्व केंद्रीय वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने सीईए के इस बयान की आलोचना की थी कि 'सरकार बेरोजगारी की समस्या का समाधान नहीं कर सकती'। अगर यह भाजपा सरकार का आधिकारिक रुख है तो यह चौंकाने वाला है, हमें भाजपा से साहसपूर्वक कहना चाहिए कि 'अपनी कुर्सी छोड़ो'।कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा था, 'हमारे युवा मोदी सरकार की दयनीय उदासीनता का खामियाजा भुगत रहे हैं, क्योंकि लगातार बढ़ती बेरोजगारी ने उनके भविष्य को नष्ट कर दिया है। आईएलओ और आईएचडी की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'भारत में बेरोजगारी की समस्या गंभीर है। वे रूढ़िवादी हैं, हम बेरोजगारी के बम पर बैठे हैं!' उन्होंने यह भी कहा था कि 2012 से मोदी सरकार के तहत युवा बेरोजगारी तीन गुना बढ़ गयी है।

मैं शेरनी हूं!

- शकील अख्तर

आज ममता बनर्जी की बहुत बात की जा रही है। विपक्ष में सीटें जीतने के मामले में वह तीसरे नंबर पर रहीं। बंगाल में उन्होंने मोदी को रोक दिया। कांग्रेस सौ के बाद सपा 37 और ममता 29 पर रहीं। तो ममता का जिक्र हम इसलिए कर रहे थे कि उस समय 1997 में जब उन्होंने कांग्रेस छोड़ी तो वे सोनिया से मिलकर उन्हें पूरी बात बता कर गईं थीं कि कैसे नरसिम्हा राव सीताराम केसरी बंगाल के नेताओं से मिलकर उन्हें परेशान कर रहे हैं।

सोनिया गांधी ने कहा मजाक में मगर यह सबसे सही है। मैं शेरनी हूं। वाकई एक शेरनी की तरह वह लगातार लड़ रही हैं। कांग्रेस संसदीय दल की नेता चुने जाने के बाद उन्होंने मोदी पर तीखा हमला करते हुए कहा कि वे हार गए हैं। नेतृत्व करने का अधिकार खो चुके हैं। सोनिया को अब यह सब कहने और करने की जरूरत नहीं है। राहुल, प्रियंका और पार्टी नई ताकत के साथ सामने आए हैं। मोदी को साधारण बहुमत से भी पीछे रोक दिया। मगर जैसा कि खुद सोनिया ने कहा और सही कहा कि वे स्वभाव से शेरनी हैं।

राहुल का सबसे बड़ा गुण उनकी निडरता माना जाता है। पिछले दस साल में जब अच्छे-अच्छे डर गए। व्यक्ति क्या संवैधानिक संस्थाएं डर गईं तब भी राहुल डटे रहे। इसी पृष्ठभूमि में अमेठी से जीते किशोरी लाल शर्मा की पत्नी ने राहुल के लिए सोनिया गांधी से कहा कि आपने शेर बच्चा पैदा किया है।

दरअसल किशोरी लाल शर्मा का परिवार पंजाबी हैं। और पंजाबी में आम मुहावरा है- शेर पुत्तर! वही उन्होंने हिन्दी में कहा। और सोनिया ने हंस कर जवाब दिया कि मैं भी तो शेरनी हूं।

इस दिलचस्प वाकये के एकाध दिन पहले ही हमने ट्वीट किया था कि संजय गांधी के लड़के को डरते हुए देखना बहुत दुखद है। हमने उसमें कहा था कि सिर्फ डीएनए ही कुछ नहीं होता है। परवरिश, माहौल भी बड़ी चीज होती है। जिसने संजय गांधी को देखा है वह जानता है कि डर और दबना क्या होता है वह संजय जानते ही नहीं थे। उन्हीं के बेटे वरुण को जब भाजपा ने टिकट नहीं दिया तो वे चुप रहे। सब सोचते थे कि वे निर्दलीय या किसी पार्टी से चुनाव लड़ेंगे। यूपी में जिस तरह कांग्रेस और समाजवादी पार्टी को जबर्दस्त सफलता मिली है उस माहौल में वरुण का जीतना कोई बड़ी बात नहीं थी। मगर ठीक है वह नहीं लड़े। लेकिन फिर उन्होंने भाजपा का भी प्रचार किया। मेनका गांधी फिर भी हारीं। और उनकी राजनीति खतम हो गई। मगर इसके साथ मेनका ने बेटे का राजनीतिक कैरियर भी दांव पर लगा दिया। वरुण की पहचान गांधी होने के कारण ही थी। और केवल नाम से टाइटल से कुछ नहीं होता है। वह गुण परिवार का आना चाहिए।

संसद में दागी नेताओं की संख्या बढ़ना चिन्ताजनक

-ललित गर्ग-

देश में 18वीं लोकसभा चुनी जा चुकी है, मंत्रिमंडल का गठन हो चुका है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और रिकॉर्ड संख्या में मतदाता होने के गर्व करने वाली स्थितियां हैं वहीं चिन्ताजनक, विचलित एवं परेशान करने वाली स्थितियां भी हैं। खबर आई है कि लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में पहुंचने वाले 543 सांसदों में 46 फीसदी आपराधिक रिकॉर्ड रखते हैं जो पिछली बार से तीन प्रतिशत अधिक है। भारतीय राजनीति में आपराधिक छवि वाले या किसी अपराध के आरोपों का सामना कर रहे लोगों को जनप्रतिनिधि बनाए जाने एवं उन्हें राष्ट्र-निर्माण की जिम्मेदारी दिया जाना-हर नागरिक के माथे पर चिंता की लकीर लाने वाली है। क्या इस स्थिति में देश की लोकतांत्रिक शुचिता एवं पवित्रता की रक्षा हो पाएगी? क्या हम आदर्श एवं मूल्यपरक समाज बना पाएंगे? क्या ये दागदार नेता एवं जन-प्रतिनिधि कालांतर हमारी व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मसलों का विश्लेषण करने वाली सचेतक संस्था एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की ताजा रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2019 में चुने गये सांसदों में जहां 233 यानी 43 फीसदी ने अपने विरुद्ध आपराधिक मामले दर्ज होने की बात स्वीकार की थी, वहीं अठाहरवीं लोकसभा के लिये चुने गए 251 सांसदों ने आपराधिक मामले दर्ज होने की बात मानी है। जो कुल संख्या का 46 फीसदी बैठती है।

आज भारत की आजादी के अमृतकाल का एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि अपहरण के आरोपी अदालत में पेश होने की जगह मंत्री पद की शपथ लेने पहुंच जाते हैं। अरविन्द केजरीवाल जैसे नेता आम चुनाव में कहते हैं कि आप लोग बड़ी संख्या में आम आदमी पार्टी को वोट दें ताकि मैं जेल जाने से बच जाऊं। हम ऐसे चरित्रहीन एवं अपराधी तत्वों को जिम्मेदारी के पद देकर कैसे सुशासन एवं ईमानदार व्यवस्था स्थापित करेंगे? कैसे आम जनता के विश्वास पर खरे उतरेंगे? कैसे संसद में दागियों के पहुंचने के लिये द्वार बंद होंगे? दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की सजग पहल पर ही वर्ष 2020 से सभी राजनीतिक दल लोकसभा व विधानसभा के उम्मीदवारों के आपराधिक रिकॉर्ड को प्रकाशित करने लगे है। निश्चित ही इस आदेश का मकसद देश की राजनीति को आपराधिक छवि वाले नेताओं से मुक्त करना ही था। लेकिन वास्तव में ऐसा हुआ नहीं क्योंकि तमाम राजनीतिक दलों की प्राथमिकता जीतने वाले उम्मीदवार थे, अब चाहे उनका आपराधिक रिकॉर्ड ही क्यों न हो। बड़ा प्रश्न है कि आखिर राजनीति में तब कौन आदर्श उपस्थित करेगा? क्या हो गया उन लोगों को जिन्होंने सदैव ही हर कुबार्नी कर-के आदर्श उपस्थित किया। लाखों के लिए अनुकरणीय बने, आदर्श बने। चाहे आजादी की लड़ाई हो, देश की सुरक्षा हो, धर्म की सुरक्षा हो, अपने वचन की रक्षा हो अथवा अपनी संस्कृति और अस्मिता की सुरक्षा का प्रश्न हो, उन्होंने फर्ज और वचन निभाने के लिए अपना सब कुछ होम दिया था। महाराणा प्रताप, भगत सिंह, दुगार्दास, छत्रसाल, शिवाजी जैसे वीरों ने अपनी तथा अपने परिवार की सुख-सुविधा को गौण कर बड़ी कुबार्नी दी थी। गुरु गोविन्दसिंह ने अपने दोनों पुत्रों को

दीवार में चिनवा दिया और पन्नाधाय ने अपनी स्वामी भक्ति के लिए अपने पुत्र को कुर्बान कर दिया। ऐसे लोगों का तो मन्दिर बनना चाहिए। इनके मन्दिर नहीं बने, पर लोगों के सिर श्रद्धा से झुकते हैं, इनका नाम आते ही। लेकिन आज जिस तरह से हमारा राष्ट्रीय जीवन और सोच विकृत हुए हैं, हमारी राजनीति स्वार्थी एवं संकीर्ण बनी है, हमारा व्यवहार झूठा हुआ है, चेहरों से ज्यादा नकाबें ओढ़ रखी हैं, उसने हमारे सभी मूल्यों को धराशायी कर दिया। राष्ट्र के करोड़ों निवासी देश के भविष्य को लेकर चिन्ता और ऊहापोह में हैं। वक्त आ गया है जब देश की संस्कृति, गौरवशाली विरासत को सुरक्षित रखने के लिए कुछ शिखर के व्यक्तियों को भागीरथी प्रयास करना होगा। दिशाशून्य हुए नेतृत्व वर्ग के सामने नया मापदण्ड रखना होगा। अगर किसी हत्या, अपहरण या अन्य संगीन अपराधों में कोई व्यक्ति आरोपी है तो उसे राजनीतिक बता कर संरक्षण देने की कोशिश या राजनीतिक लाभ उठाने की कुचेष्टा पर विराम लगाना ही होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार एवं अपराध मुक्त राजनीति को सदैव प्राथमिकता दी लेकिन चुनाव जीतने के रण में वे भी अपराधी राजनेताओं को प्रश्रय देते हुए दिखे हैं। सभी राजनीतिक दलों ने ही दागी उम्मीदवारों को टिकट दिए हैं। जो राजनीतिक दलों की कथनी और करनी के भारी अंतर को ही उजागर करता है। सवाल है कि देश के लिये नीति निर्धारण करने वाले ऐसे दागी लोग हमारे भाग्यविधाता बने रहेंगे तो हमारा भविष्य कैसा होगा? क्या आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोग जनप्रतिनिधि चुने जाने के बाद हमारी कानून-व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? क्या होगा हमारे समाज व व्यवस्था का भविष्य? क्यों तमाम आदर्शों की बात करने वाले और दूसरे दलों के नेताओं की कारगुजारियों पर सवाल उठाने वाले नेता राजनीति को अपराधियों के वर्चस्व से मुक्त कराने की ईमानदार पहल नहीं करते? क्यों सभी राजनीतिक दल भारतीय लोकतंत्र में शुचिता एवं पवित्रता के लिये सहमति नहीं बनाते? निश्चित रूप से यदि समय रहते इस दिशा में कोई गंभीर पहल नहीं होती तो आने वाले वर्षों में दागियों का यह प्रतिशत लगातार बढ़ता ही जाएगा। इसके साथ ही बड़ा संकट यह भी है कि देश के निचले सदन में येन-केन-प्रकारेण करोड़पति बने नेताओं का वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है। इस बार संसद में चुनकर आए सांसदों में 504 करोड़पति हैं। ऐसे में क्या उम्मीद की जाए कि अपनी मेहनत की कमाई से जीवनयापन करने वाला आम आदमी कभी सांसद बनने की बात सोच सकता है? दागी एवं अपराधी राजनेता लोकतंत्र की एक बड़ी विडम्बना एवं विसंगति बनते जा रहे हैं। बात लोकसभा की ही नहीं है, विभिन्न राज्यों की सरकारों में भी कैसा विरोधाभास एवं विसंगति है कि एक अपराध छवि वाला नेता कानून मंत्री बन जाता है, एक अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे प्रतिनिधि को शिक्षा मंत्री बना दिया जाता है। ऐसे ही अन्य महत्वपूर्ण मंत्रालय के साथ होता है। यह कैसी विवशता है राजनीतिक दलों की? अक्सर राजनीति को अपराध मुक्त करने के दावे की हकीकत तब सामने आ जाती है जब किसी राज्य या केंद्र में गठबंधन सरकार के गठन का मौका आता है। यह खुशी की बात है कि केन्द्र में बनी गठबंधन सरकार के मंत्रिमण्डल में ऐसी विवशता को काफी सीमा तक नियंत्रित किया गया है। सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा करने वालों की केवल एक ही मांग सुनने में आती है कि मरने के बाद हमारी लाश हमारे घर पहुंचा दी जाए। ऐसा जब पढ़ते तो हमारा मस्तक उन जवानों को सलाम करता है, लगता है कि देश भक्ति और कुबार्नी का माद्दा अभी तक मरा नहीं है। लेकिन राजनीति में ऐसा आदर्श कब उपस्थित होगा। राजनीति में चरित्र एवं नैतिकता के दीये की रोशनी मन्द पड़ गई है, तेल डालना होगा। दिल्ली सरकार में मंत्रियों के घरों पर सीबीआई के छापे और जेल की सलाखें हो या बिहार मंत्री परिषद के गठन में अपराधी तत्वों की ताजपोशी-ये गंभीर मसले हैं, जिन पर राजनीति में गहन बहस हो, राजनीति के शुद्धिकरण का सार्थक प्रयास हो, यह नया भारत -सशक्त भारत की प्राथमिकताएं होनी ही चाहिए।

सभी अपनी-अपनी पहचान एवं स्वार्थपूर्ति के लिए दौड़ रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। कोई पैसे से, कोई अपनी सुंदरता से, कोई विद्वता से, कोई व्यवहार से अपनी स्वतंत्र पहचान के लिए प्रयास करते हैं। राजनीति की दशा इससे भी बदतर है कि यहां जनता के दिलों पर राज करने के लिये नेता अपराध, भ्रष्टाचार एवं चरित्रहीनता का सहारा लेते हैं। जातिवाद, प्रांतवाद, साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर जनता को तोड़ने की कोशिशें होती है। पर हम कितना भ्रम पालते हैं। पहचान चरित्र के बिना नहीं बनती। बाकी सब अस्थायी है। चरित्र एक साधना है, तपस्या है। जिस प्रकार अहं का पेट बड़ा होता है, उसे रोज कुछ न कुछ चाहिए। उसी प्रकार राजनीतिक चरित्र को रोज संरक्षण चाहिए और यह सब दृढ़ मनोबल, साफ छवि, ईमानदारी एवं अपराध-मुक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है। राजनीति में चरित्र-नैतिकता सम्पन्न नेता ही रेस्पेक्टेबल (सम्माननीय) हो और वही एक्सेप्टेबल (स्वीकार्य) हो।

प्रेषकः
(ललित गर्ग)
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई॰ पी॰ एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92
फोनः 22727486,

मजबूरी का नाम एनडीए

- राजेंद्र शर्मा

यह किसी से छुपा हुआ नहीं था कि यह चुनाव, भारत का अब तक का सबसे नाबराबरी का चुनाव था। यह एक ऐसा चुनाव था जिसमें बराबरी के मुकाबले की यह न्यूनतम से न्यूनतम शर्त भी पूरी नहीं हो रही थी कि चुनाव आयोग, जिस पर स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव कराने का दायित्व था, कम से कम निष्पक्ष दिखाई देने की कोशिश करेगा।

बेशक, 9 जून की शाम को राष्ट्रपति भवन के कोर्टयार्ड में पूरे बहत्तर सदस्यों के जंबो मंत्रिमंडल के शपथ ग्रहण के साथ, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की तीसरी पारी शुरू हो गयी है। लेकिन, यह तीसरी पारी कितनी असामान्य होने जा रही है, इसका अंदाजा एक इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इस चुनाव में कौन जीता है और कौन हारा है, इसके विवाद पर सरकार के शपथग्रहण के बावजूद, संतोषजनक तरीके से विराम नहीं लग पाया है। इसमें शक नहीं कि 4 जून को देर शाम 18वीं लोकसभा के चुनाव की मतगणना लगभग पूरी होने तक, जब इंडिया गठबंधन की गिनती 240 पर रुक गयी और दूसरी ओर भाजपा और उसके 2024 के चुनाव के सहयोगियों की गिनती बहुमत के 272 के आंकड़े को पार कर 290 पर पहुंच गयी, तभी इतना तो सभी यथार्थवादी प्रेक्षकों के सामने साफ हो गया था कि नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ जरूर लेंगे। यह इसके बावजूद था कि कुल मिलाकर इस चुनाव में जिस तरह का जनादेश आया है, उसे देखते हुए खुद संघ-भाजपा के समर्थकों के भी एक हिस्से को यह मानने में हिचक थी कि इस चुनाव का फैसला, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के जारी रहने के पक्ष में है। 2024 के चुनाव से निकली लोकसभा सदस्यों की गिनती बेशक, भाजपा और उसके सहयोगियों के मिलकर सरकार बनाने का रास्ता बनाती थी, लेकिन इस चुनाव का जनादेश कुछ और ही कह रहा था।

यह किसी से छुपा हुआ नहीं था कि यह चुनाव, भारत का अब तक का सबसे नाबराबरी का चुनाव था। यह एक ऐसा चुनाव था जिसमें बराबरी के मुकाबले की यह न्यूनतम से न्यूनतम शर्त भी पूरी नहीं हो रही थी कि चुनाव आयोग, जिस पर स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव कराने का दायित्व था, कम से कम निष्पक्ष दिखाई देने की कोशिश करेगा। इसका नतीजा यह हुआ कि एक ओर सत्ताधारी पार्टी, चुनावी मुकाबले में विपक्ष को पंगु करने के लिए, शासन के सभी दमनकारी साधनों का खुलेआम इस्तेमाल करते हुए, जिसमें विपक्षी मुख्यमंत्रियों को जेल में डालने से लेकर विपक्षी पार्टियों के खाते जाम करना तक शामिल था, निष्पक्षता की धज्जियां उड़ा रही थी। तो दूसरी ओर सत्ताधारी पार्टी को अपने शीर्ष नेताओं से लेकर नीचे तक, विपक्ष के खिलाफ सरासर झूठे और सांप्रदायिक प्रचार को हथियार बनाने के जरिए, जनता के जानकारी पर आधारित चुनाव करने के अधिकार की जड़ें ही काटने की खुली छूट मिली हुई थी। इसके ऊपर से सत्ताधारी पार्टी को मुख्यधारा के मीडिया को न सिर्फ पैसे तथा मीडिया धन्नासेठों के समर्थन के बल पर अपने लिए छेक लेने का बल्कि तरह-तरह के सर्वेक्षणों के जरिए उसे मारक हथियार बनाने का और कुल मिलाकर बेशुमार पैसा बहाने तथा विपक्ष के संसाधनों के सारे स्रोत सुखाने का भी, मौका मिला हुआ था। इसके बावजूद, इस चुनाव में जनता ने जो फैसला सुनाया था, साफ तौर पर भाजपा के खिलाफ था। बेशक, चार सौ पार के जो दावे सत्तापक्ष और उसके मीडिया में छाए प्रचारकों द्वारा विधिवत चुनाव प्रचार शुरू होने से महीनों पहले से शुरू कर, एग्जिट पोलों तक के जरिए किए जा रहे थे, उन सबके सामने, सत्ताधारी भाजपा का 240 के आंकड़े पर और सहयोगियों को भी जोड़कर, 292 के आंकड़े पर अटक जाना भी, किसी हार से कम नहीं था। लेकिन, बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी। इससे बड़ी बात यह थी कि जहां अकेले भाजपा के 370 पार और संगियों के साथ मिलकर चार सौ पार जाने का दम भरा जा रहा था, जब नतीजे आए भाजपा खुद 240 सीटों पर सिमट गयी और सहयोगियों के साथ मिलकर मुश्किल से बहुमत का आंकड़ा पार कर पायी। इतना ही नहीं, 2019 के चुनाव में भाजपा को जो 303 सीटें हासिल हुई थीं, उनमें पूरे 20 फीसद यानी 63 सीटों की कमी इस चुनाव में जनता ने कर दी और उसके गठजोड़ की सीटों में से भी करीब इतनी ही कमी। साफ है कि जनता ने पिछले चुनाव के मुकाबले, सत्ताधारी दल और उसके गठजोड़ को ठुकराया ही है, उसे अपनी करनियों और अकरनियों के लिए राजनीतिक सजा ही दी है। इसी का एक और साक्ष्य, पिछले चुनाव के मुकाबले भाजपा और उसके गठजोड़ के मत प्रतिशत में भी बहुत ज्यादा न सही, फिर भी कुछ न कुछ गिरावट का ही होना है। खुद भाजपा के मत फीसद में यह गिरावट इसलिए और भी उल्लेखनीय हो जाती है कि 2024 में उसने तमिलनाडु, पंजाब जैसे राज्यों में सभी सीटों पर चुनाव लड़ते हुए, पिछले चुनाव के मुकाबले काफी ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़कर भी, पिछली बार के मुकाबले करीब 1 फीसद कम वोट हासिल किया है। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, 2019 में भाजपा को 37.36 फीसद वोट मिला था, जो इस चुनाव में घटकर 36.56 फीसद ही रह गया है।

अब इंडिया की राह क्या हो?

रविवार को नरेन्द्र मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री का पद सम्हाल लिया है और उनकी सरकार ने एक तरह से कामकाज शुरू भी कर दिया है। 2014 और 2019 के मुकाबले एक बड़ी चुनौती को पार करने के बाद मोदी अपनी सरकार फिर से बनाने में कामयाब तो हो गये हैं लेकिन उनके सामने खड़े कांग्रेस एवं संयुक्त प्रतिपक्षी गठबन्धन इंडिया ने उससे कहीं बड़ी बाधाओं को पार करते हुए खुद को ऐसी मजबूत स्थिति में ला खड़ा किया है जहां भाजपा का मुकाबला संसद के भीतर व बाहर दोनों जगहों पर दमदारी से किया जा सकता है। मोदी के तीसरी बार सरकार बनने के पहले से ही, सच कहा जाये तो 4 जून की रात से ही साफ हो गया था कि वह अपने पैरों पर नहीं खड़ी है। इसलिए अनुमान जताये जा रहे हैं कि यह सरकार बहुत लम्बा चलने से रही। विवादास्पद मुद्दों को लेकर जब भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी दलों- खासकर तेलुगु देसम पार्टी (टीडीपी) एवं जनता दल यूनाईटेड (जेडीयू) से टकराव बढ़ेगा तो इस सरकार के गिरने के अनुमान जाहिर किये जा रहे हैं।

तो क्या इंडिया को इन अंतर्विरोधों के बढ़ने और भाजपा प्रणीत नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (एनडीए) के अपने आप गिरने का इंतजार करना चाहिये? इसका जवाब ढूंढ़ने के लिये कई आयामों पर गौर करना होगा। पहली बात, यह तो सच है कि परस्पर टकरावों के कारण इस सरकार के गिरने का अंदेशा कई राजनीतिक विश्लेषक व्यक्त कर रहे हैं। कई तो इसकी समयावधि तक निर्धारित करने से नहीं चूक रहे हैं। यह अवधि कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक की है। इस तरह के कयासों के कई आधार हैं। इनमें प्रमुख है विभागों का वितरण। अनुमान जतलाये जा रहे हैं कि गठबंधन के जिन सहयोगी दलों को प्रभावशाली मंत्रालय, जिन्हें 'मलाईदार विभाग' भी कहा जाता है, न मिलें तो खींचतान होगी। माना जा रहा था कि सबसे रौबदार विभाग यानी गृह, रेल, विदेश और रक्षा मंत्रालयों के लिये भी कहा-सुनी सम्भावित है। इसे सभी सहयोगी दल, खासकर बड़े घटक अपने पास रखना चाहेंगे। इनमें टीडीपी एवं जेडीयू शामिल हैं जिनके क्रमशः 16 व 12 सदस्य हैं और जिन पर सरकार काफी-कुछ निर्भर करती है।

किसी भी एक के हाथ खींचने की देर है और मोदी सरकार का पतन हो जायेगा। दूसरा अहम मुद्दा होगा लोकसभा के अध्यक्ष पद का। आने वाली राजनीतिक परिस्थितियों में इस पद का बहुत महत्व होगा। खासकर, टकराव की स्थिति

में आसंदी पर बैठे व्यक्ति का आदेश व उसकी प्रतिबद्धता मोदी सरकार के लिये निर्णायक होगी। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के समय टीडीपी ने ही अपने सांसद जीएमसी बालयोगी को इस पद पर बिठाने में सफलता पायी थी। बड़ी बात नहीं कि इस बार भी वह इसकी कोशिश करे। देखना यह होगा कि क्या इस बार जेडीयू यह पद पाना चाहेगी। वैसे अनुमान लगाये जा रहे थे कि दोनों दल ज्यादा मंत्री पद चाहेंगे पर इनके एक-एक सदस्य को ही केबिनेट मंत्री बनाया गया है। फिलहाल तो कोई विवाद होता नहीं दिख रहा है। राकांपा जरूर नाराज है जिसे केवल एक राज्य मंत्री का पद दिया जा रहा था। इसलिये उसका कोई प्रतिनिधि रविवार को हुए शपथ ग्रहण समारोह में शामिल नहीं हुआ।

इंडिया के लिये असली संदेश तो यही है कि वह एनडीए में विवादों के पनपने और उनके इस कदर बड़ा होने का इंतजार न करे जिससे सरकार गिरे। अगर यह होना है तो वह अपने समय व कारणों से होता रहेगा लेकिन विपक्ष को अपने तईं प्रयासों को जारी रखना होगा। क्या हैं वे प्रयास? उसे वही करना है जो वह पिछले दो वर्षों से करती आई है। 2014 व 2019 के मुकाबले कांग्रेस को बड़ा जनादेश मिला है और दस वर्षों में उसके सदस्यों का आंकड़ा दहाई को छूने जा रहा है। राहुल गांधी द्वारा वायनाड या रायबरेली की एक सीट छोड़ने पर वहां से जो भी कांग्रेस प्रत्याशी लड़े, जीतेगा। इस तरह कांग्रेस 100 तक पहुंच जायेगी। दो राष्ट्रव्यापी यात्राओं के बाद राहुल का कद तो बढ़ा ही है, एक सर्वे में उन्हें पीएम के रूप में देखने वाले मोदी के मुकाबले 4 प्रतिशत ज्यादा पाये गये- यूपी में पीएम की पहली पसंद के तौर पर 36 फीसदी लोगों ने राहुल गांधी और 32 फीसदी लोगों ने नरेंद्र मोदी को चुना। यह उनकी लोकप्रियता के साथ स्वीकार्यता को भी दशार्ता है। एक उत्तर व दूसरी दक्षिण भारत की सीट जीतकर राहुल विपक्ष के नेता के सहज ही दावेदार बन जाते हैं। उनकी इसी बढ़ी ताकत से कांग्रेस पुनर्जीवित हुई है और अन्य दलों ने उसका नेतृत्व स्वीकार किया है।

ऐसे में कांग्रेस लोकसभा में वैसे ही मोदी सरकार के कारनामों का पदार्फाश करती रहे, जैसी वह राहुल के नेतृत्व में 17वीं लोकसभा की आखिरी बैठक तक करती रही थी। मोदी द्वारा अपने मित्र कारोबारियों- गौतम अदानी व मुकेश अंबानी की होती सहायता, इलेक्टोरल बॉन्ड्स, ईवीएम के जरिये होने वाली हेराफेरी, कोरोना वैक्सीन, अग्निवीर योजना आदि ऐसे अनेक मुद्दे हैं जो कांग्रेस व इंडिया संसद के भीतर व बाहर उठाती रही है। भारत जोड़ो यात्रा, न्याय यात्रा, चुनाव प्रचार आदि में भी विपक्ष ने ये मुद्दे जोर-शोर से उठाये थे। इनका असर भी पड़ा। महिलाओं, युवाओं, किसानों, मजदूरों, आदिवासियों आदि के लिये जो वादे कांग्रेस ने अपने न्याय पत्र में किये थे, उन्हें आधार मानकर पूरे इंडिया ब्लॉक को एक मजबूत आवाज दोनों सदनों में उठानी होगी। सामाजिक न्याय के लिये जातिगत जनगणना की वह मांग कर सरकार की घेराबन्दी करे। इंडिया के घटक दलों पर मोदी सरकार के आक्रमण और भी होंगे, तो भी वह अपनी लड़ाई को आगे बढ़ाये।

गांवों में जल्द पहुंचायें पानी, डीएम ने की समीक्षा

पाइप डालने से खुदी सडकें बारिश से पहले करायें ठीक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने जल जीवन मिशन के तहत सिलौटा, चांदीबांगर रैपुरा में हो रहे निर्माणाधीन कार्यों की समीक्षा बैठक में भारत सरकार के सिलौटा में 59, चांदीबागर में 286 व रैपुरा में 71 गांव जल जीवन मिशन के तहत आच्छादित होंगे।

मंगलवार को कलेक्टेट्ट सभागार में समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी ने कार्यदाई संस्थाओं को निर्देश दिये कि जो तीन-चार गांवों का

समीक्षा बैठक में निर्देश देते डीएम।

लक्ष्य दिया जा रहा है, वहां नियमित पानी आपूर्ति करायें। जो छोटे-छोटे मजरे हैं, वहां भी पानी पहुंचायें। प्रधान हर घर जल प्रमाण पत्र देंगे। जिलाधिकारी ने निर्माणाधीन ओएसटी बाबत जानकारी ली। निर्देश दिये कि मैनपॉवर बढ़ाकर अपूर्ण कार्य पूरे करायें। इंटेक वेल बाबत जानकारी ली। निर्देश दिये कि किसी प्रकार की समस्या नहीं होनी चाहिए।

जिलाधिकारी ने पानी की गुणवत्ता बाबत जानकारी ली। कहां कि जहां पाइप बिछ गये हैं, वहां पानी की आपूर्ति नियमित करें। पानी का नमूना भी लेते रहें। जिन सड़कों में पाइप डालने में खुदाई हो गई है, उसे मैन पावर बढ़ाकर बारिश से पहले ठीक करायें। कार्यदाई संस्थाओं को निर्देश दिये कि जिले में भारत सरकार ने महत्वपूर्ण योजना लागू की है। जिले में पानी की समस्या है। इसके निदान को भारत सरकार ने ये कार्य तेजी से करा रही है। कार्यदाई संस्थाओं से कहा कि कार्य गुणवत्तापूर्ण व शासन की मंशानुसार होने चाहिए। किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। बैठक में एडीएम नमामिगंगे श्रीमती बंदिता श्रीवास्तव, एक्सईएन जल निगम आशीष कुमार भारती, एक्सईएन विद्युत/यांत्रिक जल निगम ग्रामीण सुमित कुमार, टीपीआई अभय नारायण दीक्षित, जेई महावीर सिंह व कार्यदाई संस्था के प्रोजेक्ट मैनेजर मौजूद रहे।

शिक्षक चयन को 18 तक भेजें बायोडाटा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया ने बताया कि समाज कल्याण विभाग से संचालित मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत प्रतियोगी परीक्षाओं यूपीएससी, यूपीपीसीएस, जेईई, नीट व एनडीए/सीडीएस/एसएससी की तैयारी को कोचिंग में अध्यापन कार्य को पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन करंट अफेयर्स, सीसैट, सांइस एंड टेक्नोलॉजी, इतिहास भारत एवं विश्व, भूगोल, भारतीय अर्थव्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं आंतरिक सुरक्षा, उप्र स्पेशल, नीतिशास्त्र, भारतीय समाज, अंग्रेजी, रीजनिंग, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान व गणित विषय में अनुभवी एवं कुशल विषय विशेषज्ञों की आवश्यकता है। मंगलवार को उन्होंने कहा कि शिक्षकों का चयन साक्षात्कार/ट्रायल लेक्चर से किया जायेगा। इच्छुक शिक्षक/शिक्षिका बायोडाटा समेत अभिलेखों की प्रमाणित छायाप्रति 18 जून तक राजकीय जिला पुस्तकालय कर्वी स्थित मुख्यमंत्री अभ्युदय कोचिंग सेन्टर कार्यालय अथवा विकास भवन स्थित जिला समाज कल्याण अधिकारी कार्यालय में भेजें।

प्रवेश के लिए 20 तक करें आवेदन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया ने बताया कि समाज कल्याण विभाग शासन से संचालित मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को निःशुल्क कोचिंग में प्रवेश लेने को 20 जून तक आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक अभ्यर्थी राजकीय जिला पुस्तकालय कर्वी से आवेदन फार्म लेकर 20 जून शाम पांच तक फार्म भर कर जमा कर दें। ये कोचिंग एक जुलाई से निःशुल्क शुरू होगी। आवेदन देने वाले छात्र/छात्राओं की प्रवेश परीक्षा 21 से 25 जून के बीच होगी।

मऊ में एसडीएम पार्क को चिन्हित करें जमीनः डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने पं दीनदयाल उपाध्याय आदर्श नगर पंचायत योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2023-24 को चयनित नगर पंचायत मऊ की डीपीआर/कार्य योजना बाबत बैठक में ईओ नगर पंचायत मऊ बालकृष्ण गौतम ने कहा कि विभिन्न वार्डों की रोड व नाली के कार्य करने हैं।

मंगलवार को कलेक्टेट्ट सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि मऊ नगर पंचायत में बारात घर, पार्क, बच्चों के खेलने को स्थान, लाइट, चैराहा कुछ नए कार्य की कार्य योजना बनायें। एसडीएम मऊ को निर्देश दिये कि पार्क के लिए जमीन चिन्हित करें। ईओ नगर पंचायत को निर्देश दिये कि जल्द स्टीमेट बनाकर शासन को भेजें, ताकि मंजूरी होने के बाद कार्य शुरू हो सके। इस मौके पर एडीएम एफआर उमेश चंद्र निगम, एसडीएम मऊ राकेश कुमार पाठक, ईओ नगर पंचायत मऊ बालकृष्ण गौतम आदि मौजूद रहे।

जानलेवा हमले का वांछित दबोचा

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मऊ अजीत कुमार पाण्डेय की अगुवाई में दरोगा विनय विक्रम सिंह ने जानलेवा हमले के वांछित छोटू पुत्र दंगाली प्रजापति कुम्हारों का डेरा मजरा चित्रवार को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा विनय विक्रम सिंह, सिपाही नंदलाल राम, मनीष यादव शामिल रहे।

योग शिविर से महिलायें ले रहीं लाभ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। महिला पतंजलि योग समिति की तहसील प्रभारी पदमा सिंह ने बताया कि प्रान्तीय प्रभारी वंदना ने योग शिविर में कुछ नए व्यायाम आसन एवं सूक्ष्म व्यायाम का अभ्यास कराया। प्रतिदिन के अभ्यास से शारीरिक- मानसिक स्वास्थ्य लाभ लिया जा सकता है। योग शिविर में जिले की तमाम महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

नीट परीक्षा में धांधली पर आप ने किया विरोध-प्रदर्शन

राष्ट्रपति सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नीट परीक्षा में हुई गड़बड़ी व भ्रष्टाचार के खिलाफ आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष सन्तोषीलाल शुक्ला की अगुवाई में आप कार्यकर्ताओं ने जिला मुख्यालय में विरोध प्रदर्शन कर राष्ट्रपति संबोधित ज्ञापन एसडीएम कर्वी को सौंपा।

मंगलवार को आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष संतोषीलाल शुक्ला की अगुवाई में जिला मुख्यालय में आप कार्यकर्ताओं ने जुलूस निकालकर प्रदर्शन कर कहा कि नीट परीक्षा देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा का पेपर लीक हो गया। बेरोजगारी व पेपर लीक समस्या से जूझ रहे

प्रदर्शन करते आप कार्यकर्ता।

नौजवानों को भ्रष्टाचारी सरकार ने एक और झटका दिया है। संवेदनहीन मोदी सरकार में भर्तियों का टोटा है, दूसरी ओर भ्रष्टाचार में डूबी सरकार सभी परीक्षाओं के पेपर लीक करवाने की जिम्मेदार है। नौजवानों को उज्ज्वल भविष्य का कोई मार्ग नहीं दिख रहा। नीट परीक्षा के नतीजे 14 जून को आने थे। आनन-फानन में चार जून को लोकसभा चुनाव नतीजों के दिन घोषित कर दिये। सवाल है कि किस गुनाह को छिपाने को उसी दिन घोषित हुए। 67 बच्चों को पूरे 720 अंक मिले। एक ही कोचिंग के कई बच्चों को 720 अंक मिले। कुछ बच्चों को 718, 719 नंबर मिले, जो असम्भव हैं। क्योंकि एक प्रश्न छोड़ देने या गलत करने पर चार या पांच नंबर कम होने चाहिए तो 718 व 719 नंबर कैसे मिल सकते हैं। प्रतीत होता हैं कि नीट परीक्षा में गंभीर त्रुटि व भ्रष्टाचार हुआ है। आम आदमी पार्टी ज्ञापन से राष्ट्रपति से परीक्षा परिणाम की उच्च स्तरीय जांच व दोषियों को जेल भेजने की मांग करती है, ताकि परीक्षार्थियों के भविष्य के साथ न्याय हो सके।

इस मौके पर आप कार्यकर्ता राजबहादुर साहू, योगेन्द्र रैकवार, शिवप्रकाश सिंह, डॉ रमाकांत गुप्ता, जितेन्द्र गोयल, नर्वदा प्रसाद यादव, लवलेश केसरवानी, श्याम बाबू त्रिपाठी, सन्तोष भरद्वाज, लवलेश पाण्डेय, पुरुषोत्तम निषाद, शिवगोपाल सिंह, सतेन्द्र त्रिपाठी, दिनेश सिंह, जुगल किशोर जाटव, अनिल तिवारी अदि मौजूद रहे।

किसान पाठशाला में ग्रामीणों को दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। द मिलियिन फार्मर स्कूल किसान पाठशाला जिले के गांवों में लगाई जा रही है। उप कृषि निदेशक राज कुमार ने मानिकपुर ब्लाक के देवकली व रेहुटिया गांव में किसान पाठशाला का निरीक्षण किया।

मंगलवार को उपकृषि निदेशक राजकुमार ने देवकली की किसान पाठशाला में प्रधान सूर्यमान, मास्टर ट्रेनर रामचन्द्र बीटीएम, कृषि सलाहकार अजयपाल सिंह, क्लोबर फील्ड ऑफीसर संदीप कुमार व ग्रामीणों की मौजूदगी में हुई पाठशाला का निरीक्षण

पाठशाला में किसानों को जानकारी देते कृषि उप निदेशक।

किया। रेहुटिया गांव में किसान पाठशाला में भारी तादाद में ग्रामीण मौजूद रहे। मास्टर ट्रेनर के बतौर प्राथमिक सहायक कु शशिकला मौजूद रही। किसान पाठशाला में मौजूद किसानों ने बताया कि खरीफ तैयारी को सभी बीज गोदामों पर उपलब्ध हैं। गोदामों से किसान भाई अनुदान पर बीज ले सकते हैं। किसानों को परम्परागत/प्राकृतिक खेती करने व श्रीअन्न की खेती करने पर जोर दिया। देशी गाय के महत्व को बताते हुये जीवामृत, बीजामृत, पंचगव्य, घनजीवामृत आदि बनाने की विधि समेत उसकी उपयोगिता बतायी। किसानों को बताया कि कृषि विभाग के पोर्टल पर सोलर पंप की बुकिंग चल रही है। किसान भाई अनुदान पर सोलर पम्प ले सकते हैं। किसानों को खरीफ की खेती की तैयारी, बुआई की विधि, रोग प्रबंधन, कीट प्रबंधन व गौ आधारित प्राकृतिक खेती की विधाये तथा तकनीक व सिद्धांत के बारे में जानकारी दी।

हत्या के दो वांछित दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक राजापुर मनोज कुमार की अगुवाई में निरीक्षक अपराध विनोद कुमार की टीम ने हत्या, सबूत नष्ट करने, अपहरण, साजिश व दुष्कर्म के वांछित रामबाबू पुत्र केशव प्रसाद व चुन्ना निषाद पुत्र रामकृष्ण निवासी टिकरा सिरावल को गिरफ्तार किया। टीम में निरीक्षक अपराध विनोद कुमार, सिपाही प्रकाश मिश्रा, अरुण यादव, शुभम मिश्रा शामिल रहे।

दहेज हत्या में पति को हुई बीस साल की सजा, त्वरित न्यायालय ने सुनाया फैसला

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। दहेज हत्या मामले में दोष सिद्ध होने पर न्यायालय ने आरोपी पति को 20 साल की सजा व 12 हजार रुपये के जुर्माना से दंडित किया।

मंगलवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी गोपाल दास ने बताया कि राजापुर क्षेत्र के गोबरौल गांव के संजीव तिवारी ने रैपुरा थाने में आठ नवंबर 2022 को लिखाई रिपोर्ट में कहा कि बहन निहारिका देवी की शादी लौरी गांव के धीरेंद्र प्रताप से की थी। शादी बाद से ही पति व ससुरालीजन दहेज को लेकर उसका उत्पीड़न करते थे। सात नवम्बर 2022 को बहनोई ने फोन कर कहा था कि निहारिका को मायके ले जाओ अन्यथा उसे जान से मार देंगे। दहेज को गर्भवती बहन को मारकर फांसी से लटका दिया। लौरी गांव के लोगों से सूचना मिलने पर वह मौके पर पहुंचा। बहन के शव को ससुरालीजनों ने चारपाई में चादर डालकर ढक रखा था। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी पति धीरेंद्र प्रताप को जेल भेजा था। न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। बचाव व अभियोजन पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद त्वरित न्यायालय के अपर जिला जज नीरज श्रीवास्तव ने दोष सिद्ध होने पर पति धीरेंद्र प्रताप को बीस वर्ष की सजा समेत 12 हजार रुपये के जुर्माना से दंडित किया।

तीन अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करों से 52 किलो 840 ग्राम गांजा बरामद

दो चारपहिया समेत दो तमंचे पकडे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने बताया कि कर्वी कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह की अगुवाई में पुलिस ने तीन अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करों को दबोचकर 52 किलो 840 ग्राम गांजा समेत दो चारपहिया वाहन तथा दो तमंचे बरामद किये हैं।

मंगलवार को पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने पुलिस कार्यालय राघव प्रेक्षागार में पत्रकारों को बताया कि मादक पदार्थों की तस्करी व बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में थानाध्यक्ष एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स झांसी चन्दन पाण्डेय व कर्वी कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह की संयुक्त टीमों ने इस्माइल खां पुत्र सलीम खां निवासी गोल चैक कबीरनगर जिला रायपुर छत्तीसगढ, विष्णु साहू पुत्र हेमन्ता साहू राजामुण्डा थाना एम रामपुर जिला काला हांडी उड़ीसा व विजय गुप्ता पुत्र रज्जन गुप्ता मोहल्ला जगदीशगंज कोतवाली कर्वी को दबोचकर भारी तादाद में गांजा बरामद किया है। विजय गुप्ता का आपराधिक इतिहास है।

अन्तर्राज्जीय गांजा तस्करों के बारे में बताते पुलिस अधीक्षक।

इनके कब्जे से 52 किलो 840 ग्राम गांजा, दो तमंचे 32 बोर, दो चारपहिया वाहन, तीन मोबाइल, 10680 रुपये खोह रेलवे अंडर ब्रिज के पास से दबोचा है। ज्ञात है कि थानाध्यक्ष एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स झांसी चन्दन पाण्डेय को मुखबिर से अन्तर्राज्यीय गांजा तस्करों के गांजे की तस्करी की सूचना मिली। उन्होंने कर्वी कोतवाल की पुलिस टीम लेकर ये कार्यवाही की। तीनों पर एनडीपीएस एक्ट समेत शस्त्र अधिनियम, बरामदगी की धारायें लगाई। वाहनों को एमवी एक्ट के तहत सीज किया। टीम में एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स थानाध्यक्ष चन्दन पाण्डेय, दरोगा विनोद कुमार, दीवान रामनरेश सिंह, सिपाही अभय कुमार, विमल कुमार, देवानन्द, हरवंश कुमार, प्रदीप कुमार व कर्वी कोतवाल उपेन्द्र प्रताप सिंह, दरोगा राजीव कुमार सिंह, सिपाही राहुल देव, महिला सिपाही नीतू द्विवेदी शामिल रहे।

जिले की बहू अनुप्रिया के तीसरी बार मंत्री बनने पर मनाई खुशियां

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष/जिले की बहू/मिर्जापुर सांसद अनुप्रिया पटेल के लगातार तीसरी बार केंद्रीय मंत्री बनने पर बुंदेली सेना ने मिठाई बांटकर खुशियां मनाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार जताया।

मंगलवार को बुंदेली सेना जिलाध्यक्ष अजीत सिंह की अगुवाई में कर्वीमाफी स्थित रघुनंदन वाटिका में अनुप्रिया पटेल के तीसरी बार केंद्र सरकार में मंत्री बनने पर

खुशियां मनाते लोग।

खुशियां मनाई। मौजूद लोगों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाई, जमकर नारेबाजी की। उन्होंने बताया कि जिले की बहू अनुप्रिया पटेल केंद्र सरकार में दबदबा बनाये है, ये गौरव की बात है। तीसरी बार उन्हें केंद्र सरकार में स्वास्थ्य, रसायन व उर्वरक विभाग का राज्य मंत्री बनाया गया है। मिर्जापुर समेत जिले में भी उनके मंत्री बनने से खुशी का माहौल है। अनुप्रिया पटेल ने देश की राजनीति में पिता डा सोनेलाल पटेल का नाम रोशन किया है। कर्वीमाफी में प्रधान बद्री सिंह पटेल की अगुवाई में मंत्री बनने की खुशियां साझा की गई। कहा कि ये सभी के गौरव की बात है। जिले की बहू लगातार केंद्र की राजनीति में जलवा कायम किये हैं। उनके पति आशीष पटेल यूपी में कैबिनेट मंत्री बतौर जनता की सेवा में डटे हैं।

इस मौके पर अशोक पटेल, राजेश पांडेय, राम प्रकाश पाल, धर्मराज सिंह, अरविन्द सिंह, गया रैकवार, श्रीपाल सिंह, गोवर्धन प्रजापति आदि तमाम लोग मौजूद रहे।

बेलहरी में है अन्नपूर्णा देवी की प्राचीन मूर्ति

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मानिकपुर तहसील के ददरी गांव के बेलहरी के जंगल में माता अन्नपूर्णा देवी की अतिप्राचीन मूर्ति है। पिछले कुछ सालों तक नागा साधुओं ने यहां डेरा जमाया था। अब बड़ी मडैयन के लल्ला महाराज यहां रहते हैं। मंगलवार को मडैयन गांव के जगदीश सिंह बुन्देला एड ने बताया कि पूर्णिमा समेत सोमवार व गुरुवार को यहां मेला लगता है। दूर-दूर से श्रद्धालु यहां आते हैं। जंगल में आश्रम होने पर माता अन्नपूर्णा देवी पर श्रद्धालु लाखों रुपए के सोने के हार व चांदी के मुकुट पहनाते हैं। कीमती जेवर किसी ने चुरा लिये तो वह अंधा हो गया। फिर उसने उसी जगह लौटा दिये। रात-दिन माता के मन्दिर में देशी घी की ज्योति जल रही है। मां के आशीर्वाद से पाठा क्षेत्र आज धन-धान्य से परिपूर्ण है।

मां अन्नपूर्णा की प्राचीन मूर्ति।

बकरी पालन को मिलेगा अनुदान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डा सुभाषचन्द ने बताया कि निदेशक प्रशासन एवं विकास पशुपालन विभाग ने बकरी पालन योजना को पुनः प्रदेश के सीमान्त किसानों, भूमिहीन मजदूरों, विधवा, निराश्रित महिलाओं की आय में वृद्धि व आत्मनिर्भर बनाने को बकरी पालन से लाभार्थियों को प्राथमिकता दी जायेगी। पात्रता जिला स्तर पर भूमिहीन महिला/पुरुष, विधवा, निराश्रित महिला व कोविड प्रभावित परिवारों को प्राथमिकता मिलेगी। चयन में बीस फीसदी अनुसूचित जाति/जनजाति, तीन फीसदी दिव्यांग को शामिल किया जायेगा। लाभार्थी चयन में महिलाओं को प्राथमिकता मिलेगी। प्रति इकाई दस फीसदी लाभार्थी अंश 45 सौ रुपये है, जो चयनित लाभार्थी के बैंक खाता में जमा होंगे। जमा धनराशि का विवरण पासबुक में होगा।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने गाजा पट्टी में अमेरिका समर्थित संघर्ष विराम प्रस्ताव पारित किया

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने सोमवार को गाजा पट्टी के लिए अमेरिका समर्थित संघर्ष विराम प्रस्ताव पारित कर दिया। परिषद के 15 सदस्यों में से 14 ने पक्ष में मतदान किया। रूस ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। वह अनुपस्थित रहा। रूस के पास वीटो शक्ति है। द न्यूयॉर्क टाइम्स अखबार ने रिपोर्ट में लिखा है कि एक तरह से परिषद ने वाशिंगटन को कूटनीतिक जीत दिलाई है, क्योंकि इससे पहले अमेरिका परिषद के समक्ष पिछले तीन संघर्ष विराम प्रस्तावों को वीटो कर चुका था।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में प्रस्ताव पारित होने के बाद संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत सुश्री लिंडा थॉमस ग्रीनफील्ड ने कहा, "हिंसा के इस चक्र को समाप्त करने और टिकाऊ शांति बनाने का एकमात्र तरीका राजनीतिक समझौता है।" सुश्री ग्रीनफील्ड ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका यह सुनिश्चित करने के लिए काम करेगा कि इजराइल समझौते पर सहमत हो और कतर और मिस्र हमास को बातचीत की मेज पर लाने के लिए काम करेंगे। उन्होंने कहा, "सहयोगियो, आज हमने शांति के लिए मतदान किया।"

इस प्रस्ताव में तीन चरण की योजना बनाई गई है, जो तत्काल युद्धविराम, इजराइली जेलों में बंद फिलिस्तीनियों के बदले में सभी बंधकों की रिहाई, विस्थापित गाजावासियों की उनके घरों में वापसी और गाजा से इजराइली सेना की पूर्ण वापसी के साथ शुरू होती है।

दूसरे चरण में दोनों पक्षों की सहमति से स्थायी युद्धविराम का आह्वान किया गया है और तीसरे चरण में गाजा के लिए एक बहुवर्षीय पुनर्निर्माण योजना और मृत बंधकों के अवशेषों की वापसी शामिल होगी। प्रस्ताव में कहा गया है कि यदि पहले चरण की बातचीत में छह सप्ताह से अधिक समय लगता है, तब भी जब तक बातचीत जारी रहेगी तब तक संघर्ष विराम जारी रहेगा।" इसमें "गाजा पट्टी में जनसांख्यिकीय या क्षेत्रीय परिवर्तन के किसी भी प्रयास को भी खारिज कर दिया गया है।

संयुक्त राष्ट्र में इजराइल के प्रतिनिधि सुश्री शापिर बेन नफ्ताली ने कहा है कि युद्ध में उनके देश के लक्ष्य नहीं बदले हैं और वह बंधकों को मुक्त कराने के लिए सैन्य अभियानों का उपयोग करेगा। सुश्री नफ्ताली ने परिषद को भरोसा दिलाया है कि अगर हमास नेता सभी बंधकों को मुक्त कर दें और खुद आत्मसमर्पण कर दें, तो एक भी गोली नहीं चलाई जाएगी।

हमास ने इस पर प्रतिक्रिया दी है। उसने सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव में शामिल बातों का स्वागत करता है। संयुक्त राष्ट्र में रूस के राजदूत वासिली नेबेंज्या ने कहा कि परिषद इजराइल के साथ अमेरिका के समझौते के विवरण के बारे में अंधेरे में रही।

यूरोपीय संघ के चुनाव में सबसे मजबूत नेता बनकर उभरीं मेलोनी, जी7 शिखर सम्मेलन की करेंगी मेजबानी

मिलान। इतालवी प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी यूरोपीय संसदीय चुनाव में यूरोपीय संघ की सबसे स्थिर नेता के तौर पर उभरी हैं। मेलोनी इस सप्ताह के सात औद्योगिक राष्ट्रों के समूह के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेंगी।

जर्मन और फ्रांसीसी समकक्षों को यूरोपीय संसदीय चुनावों से झटका लगा है जबकि मेलोनी के दक्षिणपंथी पार्टी ब्रदर्स ऑफ इटली को इटली मजबूत होकर उभरी हैं। इससे वह यूरोप में भी एक मजबूत नेता के तौर पर उभरी हैं।

मेलोनी के ठोस नतीजों ने इतालवी राजनीति में एक स्थिरता पैदा की है। मेलोनी ने सोमवार को समर्थकों से कहा, मुझे गर्व है कि इटली को जी7 में और यूरोप में सबसे मजबूत सरकार के रूप में खुद को पेश करते हुए एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी है।

मेलोनी इस सप्ताह अपनी भूमिका को और मजबूत करेंगी, जब वह 13-15 जून को दक्षिणी पुगलिया क्षेत्र में जी7 बैठक का नेतृत्व करेंगी। इस बैठक में वैश्विक संघर्षों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के प्रसार और अफ्रीका पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इटली में दो दिनों के मतदान में ब्रदर्स ऑफ इटली ने 28.8 प्रतिशत इतालवी वोट प्राप्त किये। वहीं फोर्जा इटालिया ने 9.6 प्रतिशत वोट और लेगा को 9.1 प्रतिशत वोट मिले। विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी भी मजबूत हुई और उसे 24 प्रतिशत वोट मिले। परिणाम ने डेमोक्रेटिक पार्टी को मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में फिर से स्थापित किया है।

बांग्लादेश में केएनएफ के 30 सदस्य बंदरबन से चटगांव सेंट्रल जेल स्थानांतरित

ढाका। बांग्लादेश में प्रतिबंधित सशस्त्र उग्रवादी और अलगावादी राजनीतिक संगठन 'कुकी-चिन नेशनल फ्रंट (केएनएफ)' के 30 सदस्यों को बंदरबन जिला जेल से चटगांव सेंट्रल जेल स्थानांतरित किया गया है। इनको बैंक डकैती और बंदरबन के रूमा और थांची उपजिलों में 14 आग्नेयास्त्रों को लूटने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। बांग्लादेश पुलिस के अनुसार इन सबको रैपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) और पुलिस की कड़ी सुरक्षा के बीच मंगलवार सुबह चटगांव सेंट्रल जेल भेजा गया। बंदरबन जिला जेल के अधिकारियों ने कहा कि जगह की कमी के कारण दोषियों को स्थानांतरित किया गया है। बंदरबन में 23 मई और 29 मई को संयुक्त बलों के साथ गोलीबारी में केएनएफ के कम से कम पांच सदस्य मारे गए थे। इससे पहले दो अप्रैल को अलगाववादी समूह ने बंदरबन की रूमा उप जिला शाखा सोनाली बैंक के प्रबंधक एमडी निजामुद्दीन का अपहरण कर 1.5 करोड़ रुपये लूटने की कोशिश की थी। तीन अप्रैल को बंदरबन के थांची उपजिला में सोनाली बैंक और कृषि बैंक में डाका डाला था।

भारत के नवनियुक्त विदेश मंत्री जयशंकर को नेपाल के विदेश मंत्री एवं पूर्व विदेश मंत्रियों ने दी बधाई

काठमांडू। भारत के नवनियुक्त विदेश मंत्री डा एस जयशंकर को नेपाल के उप-प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री नारायणकाजी ने बधाई संदेश भेजा है। डॉ. जयशंकर को नेपाल के कई पूर्व विदेश मंत्रियों ने भी बधाई दी है।

नेपाल के उप-प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री नारायणकाजी श्रेष्ठ ने डॉ. एस जयशंकर को विदेश मंत्री नियुक्त होने पर बधाई देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की है। अपने बधाई संदेश में उप-प्रधानमंत्री श्रेष्ठ ने डॉ जयशंकर के कार्यकाल में दोनों देशों के संबंधों को और अधिक मजबूती मिलने का विश्वास व्यक्त किया है।

नेपाल के पूर्व विदेश मंत्री एनपी साउद ने भी विदेश मंत्री डा जयशंकर को बधाई देते हुए ट्वीट किया है। अपने ट्विटर हैंडल पर डॉ जयशंकर को लगातार दूसरी बार विदेश मंत्री बनने पर बधाई देते हुए पूर्व विदेश मंत्री एनपी साउद ने कहा है कि पहले कार्यकाल की तरह ही उनके दूसरे कार्यकाल में भी उन्हें सफलता मिले। साउद ने कहा है कि विदेश मंत्री के रूप में डॉ. एस जयशंकर ने पूरी दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई थी उसी तरह इस बार भी वो विश्व कूटनीतिक मंच को एक नई दिशा देने में कामयाब होंगे। इसके अलावा नेपाल के पूर्व विदेश मंत्रियों डॉ. प्रकाश शरण महत, डॉ. युवराज खतिवडा, डॉ. बिमला राई पौडेल आदि ने भी डॉ. एस जयशंकर को विदेश मंत्री बनने पर बधाई दी है।

नेपाल के गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ दायर रिट सुप्रीम कोर्ट ने तलब की

काठमांडू। नेपाल के उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ सहकारी ठगी मामले में जिला अदालत में दायर रिट को सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के लिए तलब किया है। सुप्रीम कोर्ट ने लामिछाने को पदमुक्त करते हुए जांच का आदेश देने की मांग पर यह आदेश दिया है। वैसे सरकारी वकील की सिफारिश पर महान्यायाधिवक्ता के कार्यालय ने लामिछाने के खिलाफ किसी भी प्रकार की याचिका दायर करने से इनकार कर दिया था। बाद में अदालत के हस्तक्षेप के बाद अब ना सिर्फ यह मुकदमा दायर हुआ है बल्कि अगले हफ्ते से इस मामले की नियमित सुनवाई शुरू होनी है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर के नेताओं ने बधाई दी

इस्लामाबाद/जोहानिसबर्ग/सिंगापुर, । नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर समेत कई राष्ट्र प्रमुखों ने बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

पीएम मोदी को बधाई देने वालों में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और उनके बड़े भाई एवं सत्तारूढ़ पार्टी के प्रमुख नवाज शरीफ ने नरेन्द्र मोदी को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने पर सोमवार को शुभकामनाएं दीं। इसके साथ ही दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा और सिंगापुर के प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग ने भी मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में तीसरे कार्यकाल के लिए शपथ लेने पर बधाई दी। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री एवं पाकिस्तान मुस्लिम लीग (पीएमएल-एन) के प्रमुख नवाज शरीफ ने सोशल मीडिया मंच ह्यएक्सह्ल पर एक पोस्ट में कहा कि हाल के चुनाव में मोदी की सफलता उनके नेतृत्व में लोगों के विश्वास को दशार्ती है। उन्होंने कहा कि मोदी इस अवसर का लाभ दक्षिण एशिया के दो अरब लोगों के भाग्य को आकार देने में उठाएं। नवाज ने कहा, तीसरी बार सत्ता संभालने पर पीएम मोदी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। हाल के चुनाव में आपकी पार्टी की सफलता आपके नेतृत्व में लोगों के विश्वास को दशार्ती है। आइए हम नफरत को आशा से बदलें और दक्षिण एशिया के दो अरब लोगों के भाग्य को आकार देने के लिए अवसर का लाभ उठाएं। मोदी ने रविवार को नयी दिल्ली में लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने चीन से लौटने के बाद ह्यएक्सह्ल पर एक पोस्ट में मोदी को बधाई दी। भारत के पड़ोस से शहबाज ही एक ऐसे नेता थे जिन्हें नयी दिल्ली में मोदी के शपथग्रहण समारोह में आमंत्रित नहीं किया गया।

शहबाज ने कहा, ह्यह्यभारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने पर नरेन्द्र मोदी को बधाई।

वहीं, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा ने भारत के लोगों के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सराहना की और उन्हें ऐतिहासिक तीसरे कार्यकाल के लिए उनकी चुनावी जीत पर बधाई दी।

रामफोसा ने भारत के लोगों को अपने लोकतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग करने और चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने के लिए भी बधाई दी जो 19 अप्रैल से एक जून तक सात चरणों में संपन्न हुई।

इस बीच, सिंगापुर के प्रधान मंत्री लॉरेंस वोंग ने भी नरेन्द्र मोदी को उनके फिर से प्रधानमंत्री बनने पर बधाई दी।

वोंग ने रविवार को अपने भारतीय समकक्ष को लिखे एक बधाई पत्र में कहा कि मोदी ने पिछले दशक में ह्यभारत के उल्लेखनीय परिवर्तन को बढ़ावा दिया और लाखों लोगों के जीवन का उत्थान किया।

पाकिस्तान के सुरक्षा बलों ने 85 अफगान नागरिकों को गिरफ्तार किया

क्वेटा। सुरक्षा बलों ने अवैध रूप से पाकिस्तान में प्रवेश करने के आरोप में सीमावर्ती चगाई जिले में 85 अफगान नागरिकों को गिरफ्तार किया। पाकिस्तान के समाचार पत्र डान में अधिकारियों के हवाले से छपी रिपोर्ट में कहा गया है कि इन नागरिकों के पास कोई यात्रा दस्तावेज नहीं थे। इनको बिना कानूनी यात्रा दस्तावेजों के पाकिस्तान की सीमा के अंदर दबोचा गया।

रिपोर्ट के अनुसार यह सभी अफगान नागरिक यहां से ईरान में प्रवेश करने की जुगत में थे। एक वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी ने कहा कि अफगान नागरिकों को गिरफ्तार कर लिया गया और आगे की जांच के लिए उन्हें लेवी बल को सौंप दिया गया है। लेवी अधिकारियों ने कहा कि कानूनी औपचारिकता और प्रक्रिया पूरी करने के बाद अफगान नागरिकों को पाकिस्तान-अफगान सीमा पर बाराचा क्रॉसिंग गेट के माध्यम से निर्वासित किया जाएगा।

मियामी में चार मंजिला आवासीय इमारत में भीषण आग, दो घायल

मियामी। अमेरिका के मियामी शहर में सोमवार सुबह एक चार मंजिला आवासीय इमारत में भीषण आग लग गई। इस आग से दो लोग घायल हो गए हैं। शहर के मेयर ने यह जानकारी दी।

मेयर फ्रांसिस सुआरेज ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सुबह करीब 8 बजकर 15 मिनट पर आग लगने की सूचना मिलने के बाद अग्निशमन कर्मी और पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। मेयर ने बताया कि बचाव अभियान के दौरान दो अग्निशमनकर्मी घायल हो गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने बताया कि दोनों की हालत स्थिर है।

स्थानीय समाचार चैनल पर प्रसारित वीडियो में आग लगने के कई घंटों बाद इमारत से आग की लपटें उठती दिखाई दीं और साथ ही धुएं का गुबार भी उठता दिखा। सुआरेज ने कहा कि ह्यटेम्पल कोर्ट अपार्टमेंटह्ल में लगी आग के दौरान कई बुजुर्गों को भी बचाया गया और उन्हें तत्काल प्राथमिक उपचार दिया गया। आग लगने की घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

ब्लिंकन ने नेतन्याहू के साथ बैठक में 'बंधक प्रस्ताव' और गाजा के लिए मानवीय सहायता पर चर्चा की

तेल अवीव: मध्य पूर्व की यात्रा पर गए संयुक्त राज्य अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने सोमवार को इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ बैठक की. बैठक में बंधक प्रस्ताव और गाजा में मानवीय सहायता के वितरण के बारे में चर्चा की गई.

अमेरिकी विदेश विभाग ने एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा कि विदेश मंत्री एंटनी जे. ब्लिंकन ने आज यरुशलम में इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात की. विदेश मंत्री ने दोहराया कि संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य विश्व नेता राष्ट्रपति बाइडेन की ओर से बताए गए व्यापक प्रस्ताव के साथ खड़े रहेंगे. जिससे गाजा में तत्काल युद्धविराम के साथ सभी बंधकों की रिहाई हो सकेगी.

उन्होंने कहा कि प्रस्ताव पर सफलता मिली तो पूरे गाजा में वितरण के लिए मानवीय सहायता में उल्लेखनीय और निरंतर वृद्धि होगी. ब्लिंकन 10-12 जून तक मिस्र, इजराइल, जॉर्डन और कतर की यात्रा करेंगे. विदेश विभाग के अनुसार ब्लिंकन ने इजरायल की सुरक्षा के लिए अमेरिका की दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित किया. जिसमें यह सुनिश्चित करना भी शामिल है कि 7 अक्टूबर की घटना कभी न दोहराई जाए.

हालांकि, उन्होंने दोहराया कि मौजूदा प्रस्ताव इजराइल की उत्तरी सीमा पर शांति की संभावना को खोलेगा. विदेश विभाग ने कहा कि ब्लिंकन ने संघर्ष के बाद की अवधि की योजना बनाने के लिए चल रहे कूटनीतिक प्रयासों पर प्रधानमंत्री को अपडेट किया. इजराइल और फिलिस्तीनियों को समान रूप से दीर्घकालिक शांति, सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करने के लिए उन प्रयासों के महत्व पर जोर दिया. ब्लिंकन ने संघर्ष को फैलने से रोकने के महत्व पर भी जोर दिया.

बता दें कि पिछले हफ्ते, ब्लिंकन ने इजरायल के रक्षा मंत्री योआव गैलेंट और इजरायल के मंत्री बेनी गैंट्ज से गाजा में पूर्ण और संपूर्ण युद्धविराम हासिल करने के इजरायल के प्रस्ताव के बारे में बात की थी. अमेरिकी विदेश मंत्री ने दोहराया कि बंधकों को उनके प्रियजनों से फिर से मिलाने के अलावा, प्रस्ताव इजरायल के दीर्घकालिक सुरक्षा हितों को आगे बढ़ाएगा, जिसमें लेबनान के साथ इजरायल की सीमा पर शांति की संभावना को खोलना भी शामिल है, जिससे इजरायली अपने घर लौट सकेंगे

बंधकों की रिहाई के बारे में इजराइल और हमास के बीच सीधी बातचीत कुछ शर्तों पर असहमति के कारण कुछ समय पहले रोक दी गई थी. समूह की ओर से एक बयान में कहा गया है कि इसने 'अप्रत्यक्ष वार्ता के सभी पिछले दौरों में मध्यस्थों के प्रयासों से निपटने में लचीलापन और सकारात्मकता दिखाई है।

विमान दुर्घटना में मलावी के उपराष्ट्रपति का निधन, पत्नी समेत नौ की मौत, 24 घंटे बाद जंगल में मिला मलबा

ब्लैंटायर (मलावी): मलावी के उपराष्ट्रपति सौलोस चिलिमा और उनकी पत्नी सहित 9 अन्य लोगों की उस समय मृत्यु हो गई. जब वे जिस विमान में यात्रा कर रहे थे वह चिकनगावा पर्वत श्रृंखला में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, सरकार ने मंगलवार को यह जानकारी दी. राष्ट्रपति लाजरस चकवेरा ने मंगलवार को राष्ट्रीय शोक दिवस घोषित किया.

मलावी के राष्ट्रपति ने मंगलवार को कहा कि विमान दुर्घटना में देश के उपराष्ट्रपति और नौ अन्य लोगों की मौत हो गई. एक दिन से अधिक समय तक चली खोज के बाद उपराष्ट्रपति सौलोस चिलिमा को ले जा रहे सैन्य विमान का मलबा देश के उत्तर में एक पहाड़ी क्षेत्र में पाया गया. मलावी के राष्ट्रपति लाजरस चकवेरा ने राज्य टेलीविजन पर एक लाइव संबोधन में कहा कि दुर्घटना में कोई भी जीवित नहीं बचा है.

सैकड़ों सैनिक, पुलिस अधिकारी और वन रेंजर उस विमान की तलाश कर रहे थे, जिसमें एक पूर्व प्रथम महिला भी सवार थी. यह विमान सोमवार सुबह लापता हो गया था

. यह विमान दक्षिणी अफ्रीकी देश की राजधानी लिलोंग्वे से उत्तर में लगभग 370 किलोमीटर (230 मील) दूर मजुजू शहर के लिए 45 मिनट की उड़ान भर रहा था.

चकवेरा ने कहा कि हवाई यातायात नियंत्रकों ने विमान को खराब मौसम और खराब दृश्यता के कारण मजुजू के हवाई अड्डे पर उतरने का प्रयास न करने के लिए कहा और इसे वापस लिलोंग्वे की ओर लौटने के लिए कहा. उन्होंने बताया कि इसके बाद एयर ट्रैफिक कंट्रोल का विमान से संपर्क टूट गया और यह रडार से गायब हो गया. विमान में सात यात्री और तीन सैन्य चालक दल के सदस्य सवार थे. राष्ट्रपति ने विमान को मलावी सशस्त्र बलों द्वारा संचालित एक छोटा, प्रोपेलर चालित विमान बताया.